Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 49

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

4 जमादी अलअव्वल 1443 हिज्री कमरी 9 फतह 1400 हिज्री शम्सी 9 दिसम्बर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

हज्र-ए-असवद को चूमना

(1597)हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि वह हज्रे असवद के पास आए और उस को चूमा और कहा : मैं ख़ूब जानता हूँ कि तो एक पत्थर ही है , न नुक़्सान दे सकता है न लाभ और अगर मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुझे चूमते न देखा होता तो तुझे हरगिज़ न चूमता।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब रज़ि अल्लाह हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं: मुशरिक क़ौम अरब तथा अन्य संसार घड़े हुए पत्थरों की पूजा करते थे और उन्हें लाभ तथा हानि का मालिक समझते थे। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह ने उनके मुशरिकाना ख़्याल का रद्द फ़रमाया है ताकि मुस्लमानों में से अनभिज्ञ लोगों को इस पत्थर के बारे में कोई ग़लतफ़हमी न हो। इबादत में प्रशंसा तथा तारीफ़ , विनय, अशा तथा निराशा और दुआ होती है और इन बातों में से किसी एक बात का भी हज्र असवद के चूमने या छूने से हरगिज़ कोई सम्बन्ध नहीं और न हज्र असवद तक़बील (चूमने) और इस्तिलाम (छूने) से विशेष है बल्कि कई रिवायतों से मालूम होता है कि रुकन यमानी भी चूमा जाता था।

(सही बुख़ारी , भाग 3 किताबुल हज्ज, प्रकाशन 2008 ई कादियान)

ईमान जब इन्सान के अंदर पैदा होता है तो कर्मों में एक लज़्ज़त पैदा हो जाती है। इस की मार्फ़त की आँख खुल जाती है। वह नमाज़ पढ़ता है,जो नमाज़ पढ़ने का हक़ है। गुनाहों से उसे विरक्तता पैदा होती है। नापाक मज्लिसों से नफ़रत करता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कर्म ईमान का ज़ेवर है

इस प्रकार की घटनाएं डरातू हैं। अपने ईमान का वज़न करो। कर्म ईमान का ज़ेवर है। यदि व्यावहारिक हालत ठीक नहीं है तो हक़ीक़त में ईमान भी नहीं है। मोमिन हसीन होता है। जैसे एक ख़ूबसूरत को मामूली और हल्का सा कड़ा भी पहना दिया जाए तो वह उसे ज़्यादा ख़ूबसूरत बना देता है। इसी तरह पर ईमानदार को कर्म और भी ख़ूबसूरत दिखाता है और यदि बुरा कर्म है तो कुछ भी नहीं। हक़ीक़ी ईमान जब इन्सान के अंदर पैदा होता है तो कर्मों में एक लज़्ज़त पैदा हो जाती है। इस की मार्फ़त की आँख खुल जाती है। वह नमाज़ पढ़ता है,जो नमाज़ पढ़ने का हक़ है। गुनाहों से उसे विरक्तता पैदा होती है। नापाक मज्लिसों से नफ़रत करता है। अल्लाह तआला और उसके रसूल की महानता और प्रताप के ज़ाहिर करने के लिए अपने दिल में एक जोश और तड़प देखता है। वही ईमान उसे मसीह की तरह सलीब पर चढ़ाने से नहीं रोकता। वह ख़ुदा के लिए हाँ ख़ुदा ही के लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह आग में भी पड़ जाने पर राज़ी होता है। जब वह अपनी रज़ा को अल्लाह तआला की रज़ा के अधीन कर देता है तो फिर अल्लाह तआला जो दिलों के भेद को जानने वाला है, उस का मुहाफ़िज़ और निगरान हो जाता है। वह सलीब पर से भी ज़िन्दा उतार लेता है और आग में से भी सही सलामत निकाल लेता है। इन चमत्कारों को वही देखते हैं जो ख़ुदा तआला पर पूरा ईमान रखतें हैं।

अत: अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि की सच्चाई इस आग के वक़्त ज़ाहिर हुआ जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का घेराव किया गया। यद्यपि कई की राय निकालने की भी थी परन्तु असल क़तल ही था। ऐसी हालत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अपने सिदक़ तथा वफ़ा का वह नमूना दिखाया जो सदैव के लिए नमूना रहेगा। इस मुसीबत की

शेष पृष्ठ 9 पर

लोगों में जो जि

लाए थे वे इन्सान ही थे।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो सूरत अल-हिजर आयत 100 وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : यक़ीन के अर्थ इस जगह पर मौत के हैं। फ़रमाता है कि अब तू मौत तक हमारी इबादत में लगा रह। अर्थात इस्लाम को जो तरक़्क़ी मिलेगी इस में अब कोई बाधा नहीं पड़ेगी और तू सन्तोष के साथ अपनी मौत तक खुले बंदों अल्लाह तआला की इबादत कर सकेगा और ये लोग इस वक़्त जो तेरी इबादात में रोकें डालते हैं उनको ख़ुदा तआला इस तरह मिटा देगा कि तेरी सारी ज़िन्दगी इबादत की आज़ादी की दृष्टि से आराम में गुज़रेगी।

यक़ीन के प्रसिद्ध अर्थ भी इस जगह हो सकते हैं और इस अवस्था में यह अर्थ होंगे कि जिस साअत का वादा है इसके आने तक खासतौर पर इबादत में लीन रहो मानो अज़ाब या साइत के चिन्ह ज़ाहिर होने का नाम यक़ीन रखा क्योंकि जब तक वादा पूरा न हो उस की पूरी हक़ीक़त ज़ाहिर नहीं होती। अत: फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा हो तो खासतौर पर दुआ और इबादत में लग जाना चाहिए ताकि वह वादा हर किस्म की ख़ैर के साथ पूरा हो।

इसके यह अर्थ नहीं कि दूसरे दिनों में इबादत छोड़ सकता है क्योंकि जब यह आयत नाज़िल हुई उस वक़्त भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इबादत करते थे। अर्थ इस के अर्थ मामूल से ज़्यादा इबादत और ध्यान के हैं।

कुछ अज्ञान बिद्दअती इस आयत के यह अर्थ करते हैं कि जब तक यक़ीन प्राप्त न हो इबादत फ़र्ज़ है जब यक़ीन प्राप्त हो जाए तो फिर नहीं क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है "यक़ीन के प्राप्त होने तक इबादत कर" यह नादान नहीं जानते कि इस तरह वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करते हैं और मानो यह कहते हैं कि इस सूरत के उतरने तक आप को पूर्ण यक़ीन प्राप्त न हुआ था। अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबुव्वत के

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग-12)

हुकूमती बैंक अपने सरमाया को कल्याणकारी कामों पर लगाते हैं जिसके परिणाम में देश में रहने वालों की सहूलतों के लिए विभिन्न योजनाएं बनाई जाती हैं, अर्थव्यवस्था में तरक़्क़ी होती है और देश के लोगों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं, इसलिए ऐसे बैंकों से मिलने वाले लाभ को ज़ाती इस्तिमाल में लाया जा सकता है

हर मुरब्बी और मुअल्लिम यह अह्द करे कि उसने डरते डरते दिन गुज़र करना है और तक़्वा से रात व्यतीत करनी है और अहमदियत का सन्देश पहुंचाने की जो ज़िम्मेदारी उस पर डाली गई है, इस को एक विशेष जोश और से देश के कोने कोने में फैलाना है, अपने अंदर सादगी पैदा करनी है, जो भी थोड़ा बहुत गुज़ारा मिलता है, और जो भी थोड़ी बहुत सहूलयात मिलती हैं उनको बहुत समझना है, हर मुरब्बी और मुअल्लिम का काम है कि कम से कम एक घंटा तहज्जुद की नमाज़ पढ़े

प्रश्न : मुलाक़ात तिथि 07 नवंबर 2020 ई. में एक और मैंबर आमला ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि हुज़ूर अनवर ने पिछले रोज़ के ख़ुतबा जुमा में तीसरी जंग-ए-अज़ीम का वर्णन फ़रमाया था। यदि यह जंग होती है तो क्या जमाअत अहमदिया के लोगों भी इस की ज़द में आ सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का निमंलिखित शब्दों में उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : मिसाल तो यह है नाँ कि आटे के साथ घुन भी पिस्ता है। हम घुन तो नहीं हैं लेकिन जब दुनिया पर असरात होंगे तो अहमदी भी इस की ज़द में आएँगे लेकिन उनकी बहुत मामूली संख्यां होगी। इस्लाम की फ़ुतूहात के लिए जो जंगें हुई थीं, अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी की थी कि जंगें तुम जीतोगे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में जंगें जीतते रहे लेकिन क्या सहाबा शहीद नहीं होते रहे? अब बिमारियां आती हैं। इन बिमारियों के लिए निशानात आ रहे हैं, भूकंप आ रहे हैं, तूफ़ान आ रहे हैं। उनमें कई दफ़ा कुछ अहमदियों को भी नुक़्सान पहुंचता है।

यदि हम अल्लाह तआला से सही सम्बन्ध पैदा कर के रखेंगे तो जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि

आग है पर आग से वे सब बचाए जाएँगे।
जोकि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुलजलाल से प्यार

यदि हमारा अल्लाह तआला से सम्बन्ध सही होगा और अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने वाले होंगे, उसकी शिक्षा पर अमल करने वाले होंगे, उसके बंदों के हक़ अदा करने वाले होंगे तो फिर अल्लाह तआला हमारे नुक़्सानों को बहुत कम कर देगा। और हमें अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से बचा लेगा, और दुनिया को फिर सबक़ मिलेगा। लेकिन इस से पहले यदि हम यह हक़ अदा कर रहे हैं तो हमें दुनिया को बताना होगा कि इन आफ़ात का कारण और जंग का कारण ख़ुदा से दूरी है और अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा नहीं करने हैं। इसलिए तुम लोग सँभल जाओ। जब जंग-ए-अज़ीम ख़त्म होगी तो लोगों को पता होगा कि हाँ एक वर्ग, एक क़ौम, मुस्लमानों का एक फ़िर्क़ा, एक जमाअत हमें यह तलक़ीन किया करती थी, तब उनका ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू पैदा होगा। उस वक़्त वे आपकी तरफ़ आएँगे।

अत: यदि तो हम अपने हक़ अदा कर रहे हैं तो आइन्दा जंग-ए-अज़ीम के बाद जो जमाअत की तरक़्क़ी के निशानात हैं वे हम देखेंगे। और यदि हम हक़ अदा नहीं कर रहे और हमारा भी दुनियादारों की तरह हाल है, दुनिया में डूबे हुए हैं, पाँच वक़्त की नमाज़ों को भूल गए हैं, अल्लाह तआला के हक़ अदा करना भूल गए हैं, लोगों के हक़ अदा करना भूल गए हैं तो फिर हम भी (इस जंग के असरात की ज़द में चले जाएँगे। हमारी कोई गारंटी तो नहीं कि अल्लाह तआला ने ज़मानत दी हुई है कि तुमने बैअत कर ली है तो तुम बच जाओगे। बैअत के साथ शर्तों हैं, वे हम पूरी करेंगे तो बच जाएँगे। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि आग से वे बचाए जाएँगे जब तुम शर्तों पूरी करोगे। अल्लाह तआला से प्यार का प्रकटन केवल ज़बानी नहीं होगा बल्कि अमली प्रकटन होगा। तब तुम बचाए जाओगे।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ बंगलादेश के मुरब्बियान तिथि 08 नवंबर 2020 ई. को होने वाली virtual मुलाक़ात में **एक मुरब्बी साहब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि साधारणत: नौजवान तबक़ा कारोबार या मुलाज़मत के सिलसिले में शहर चला जाता है, जिस से देहाती जमाअतों में कारकुनान और ओहदेदार अहबाब की कमी होती जा रही है, इन हालत में हम क्या कर सकते हैं?** हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस का उत्तर अता फ़रमाते हुए फ़रमाया :

उत्तर : यह तो दुनिया का क़ानून है, हर जगह दुनिया में इसी तरह होता है कि जो rural area देहाती एरिया है वहां से urban area में migration होती है, शहरी इलाक़ा में migration होती है। और जहां क़ौमों ने तरक़्क़ी करनी होती है यह natural चीज़ है। छोटे इलाक़े हैं, क़स्बे हैं, गांव हैं उनकी आबादियां तेज़ी से बढ़ रही होती हैं। यदि आबादीयां वहीं रहेंगी और पढ़ लिख के शहर में नहीं आयेंगी तो फिर तरक़्क़ी नहीं हो सकती। यह तो निशानी है इस बात की कि शहरों में तरक़्क़ी के अवसर ज़्यादा हैं और क़ौम तरक़्क़ी कर रही है। या पढ़ाई के अवसर ज़्यादा हैं और वह पढ़ाई करके आगे बढ़ रहे हैं।

हाँ बंग्लादेश में आपकी एक economist थी उसने cottage industry का सिस्टम शुरू किया था कि बजाय बाहर जाने के देहातों में और छोटे कस्बों में cottage industry हो और लोग वहीं काम करें और वहीं उनको investment करने के अवसर मयस्सर आ जाएँ। यदि वैसे कोई अवसर मयस्सर आ जाएं तो बड़ी अच्छी बात है, जमाअत के लोगों को भी इस से फ़ायदा उठाना चाहिए और फिर वहां रह कर काम करना चाहिए। लेकिन जो बहुत ज़्यादा पढ़े लिखे हैं, जिनको शिक्षा हासिल करके फिर आगे बढ़ने के ज़्यादा अवसर मयस्सर आ रहे हैं, उन्होंने तो ज़ाहिर है बाहर जाना है। फिर इस का यही ईलाज है कि जो लोग पीछे रह गए हैं वह अपना काम ज़्यादा से ज़्यादा निभाने की कोशिश करें और बैअतें कराने की कोशिश करें, ज़्यादा तब्लीग़ करें, लोगों को ज़्यादा जमाअत का परिचय करवाएं और जो नौजवान नसल नीचे से उठ रही है, अतफ़ाल में से ख़ुद्दाम में आ रहे हैं उनमें एहसास ज़िम्मेदारी पैदा करें कि वह ज़्यादा से ज़्यादा जमाअत का काम कर सकें।

देखें रोज़गार के लिए उन्होंने बाहर जाना ही जाना है। इसका तरीक़ा यही है कि एक तो उन क्षेत्रों में बैअतें करवाएं, दूसरे जो नई नौजवान नसल है उसकी तर्बीयत इस तरह करें कि वे जमाअत को सँभाल सकें।

(धन्यवाद सहित अख़बार इंटरनैशनल 15 जनवरी 2021 ई.)

एक दोस्त ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद कि क़ुरआन-ए-करीम में चूर के हाथ काटने और व्यभिचारी को पत्थरों से मार-मार कर मार डालने करने का स्पष्ट आदेश आया है''के हवाले से लिखा कि "क़ुरआन-ए-करीम में चोर के हाथ काटने का तो वर्णन मौजूद है लेकिन व्यभिचारी को पत्थरों से मार-मार कर मार डालने का किसी आयत में वर्णन नहीं ?इस बारे में मार्गदर्शन की दरख़ास्त है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 15 अक्तूबर 2018 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : इस्लामी सज़ाओं के साधारणत: दो पहलू हैं एक अत्यधिक सज़ा और एक निसबतन कम सज़ा। और उन सज़ाओं का बुनियादी उद्देश्य बुराई की रोक-थाम और दूसरों के लिए सबक का सामान करना है। इसलिए हम देखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मुबारक समय में हर किस्म के चोर को हाथ काटने की सज़ा नहीं दी गई उदाहरणत: खाने पीने की वस्तुओं की चोरी पर कभी हाथ नहीं काटा गया। लेकिन यदि कोई चोर किसी

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

ख़ुदा की क़सम मुझे तो यह पसन्द है कि मैं इस तरह नजात पा जाऊं कि लिऐ لَا عَلَيَّ وَلَا لِيَ कि न मुझ पर कुछ अज़ाब हो और न मेरे लिए कोई सवाब जज़ा हो।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

हज़रत उमर रज़ि की सीरत से कुछ घटनाएं इसी तरह हज़रत उमर रज़ि के बारे में सहाबा कराम रज़ि और कुछ मुस्तश्रिक़ीन के विचारों का वर्णन।

पाँच मरहूमीन :साहबज़ादी आसिफ़ा मसूदा बेगम साहिबा पत्नी डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहिब, मुकर्रमा क्लारा साहिबा पत्नी रोलान साइन बा ऐफ़ साहिब भूतपूर्व अमीर जमाअत कज़ाकिस्तान, विंग कमांडर अब्दुर्रशीद साहिब, आदरणीया ज़ुबेदा बेगम साहिबा पत्नी करीम अहमद नईम साहिब आफ़ अमरीका और आदरणीय हफ़ीज़ अहमद घुमन साहिब का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 अक्तूबर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछ्ले ख़ुतबा में मैं ने हज़रत उमर रज़ि की शहादत के अन्तर्गत हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के आपसी उलझाओ का वर्णन किया था और जिस तरह वह रिवायत वर्णन की गई थी , यह भी बताया था कि एक रिवायत है, और अल्लाह बेहतर जानता है कहाँ तक यह सच्ची है ,कि उनकी आपस में लड़ाई हुई। इस बारे में और अधिक अनुसन्धान के बाद जो बातें सामने आई हैं वह भी वर्णन कर देता हूँ। एक जगह यह भी वर्णन मिला है कि हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ि जब हज़रत उसमान रज़ि से उलझे हैं तो उस वक़्त तक अभी हज़रत उसमान रज़ि ख़िलाफ़त के मस्नद पर फ़ाइज़ नहीं हुए थे। पहले भी वर्णन हो चुका है कि उबैदुल्लाह का इरादा था कि वह आज मदीना के किसी क़ैदी को ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। मुहाजिरीन अव्वलीन उनके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए और उन्हें रोका और उन्हें धमकी दी तो वह मुहाजिरीन को भी सम्मान में न लाए और उन्होंने कहा कि अल्लाह क़सम! मैं उन्हें अर्थात जितने भी क़ैदी हैं, ग़ुलाम हैं, ज़रूर क़तल करूँगा। यहां तक कि अमरो बिन आस रज़ि उनके साथ निरन्तर लगे रहे यहां तक कि उन्होंने तलवार अमरो बिन आस रज़ि के हवाले कर दी। फिर सअद बिन अबी वक़ास रज़ि समझाने के लिए उनके पास आए तो उनसे भी उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ि ने लड़ाई की। जैसा कि वर्णन हुआ था कि हज़रत उसमान रज़ि से लड़ाई हुई और लोगों ने बीच बचाओ करवाया। इस अन्तर्गत यह वर्णन मिलता है कि जब यह घटना हुई तो अभी हज़रत उसमान रज़ि की बैअत नहीं की गई थी। अर्थात हज़रत उसमान रज़ि उस वक़्त तक ख़लीफ़ा मुंतख़ब नहीं हुए थे जैसा कि पहले भी वर्णन हो गया है।

(उद्धरित सीरत उमर फारूक़ रज़ि लेखख मुहम्मद रज़ा (अनुवादक़ पृष्ठ -342 343 प्रकाशन मकतबा इस्लामिया लाहौर 2010 ई)

इसी तरह यह भी इशारा मिलता है कि हज़रत उबैदुल्लाह को इस के बाद क़ैद भी कर लिया गया था। हज़रत उसमान रज़ि की बैअत के बाद जब ख़िलाफ़त पर आसीन हुए तो हज़रत उबैदुल्लाह को हज़रत उसमान रज़ि के सामने पेश किया गया तो अमीरुल मोमनीन ने मुहाजिरीन और अन्सार की एक जमाअत से सम्बोधित हो कर पूछा कि मुझे इस शख़्स के बारे में राय दो जिसने इस्लाम में उपद्रव डाला है। हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि ने फ़रमाया कि इसे छोड़ना इन्साफ़ से दूर है, मेरी राय में इस को अर्थात उबैदुल्लाह बिन अमर रज़ि को क़तल करा देना चाहिए लेकिन कुछ मुहाजिरीन ने इस राय को असहनीय, शिद्दत और सख़्ती पर आधारित कहा और कहा कि कल उमर रज़ि क़तल किए गए और आज उनका बेटा क़तल कर दिया जाए। इस एतराज़ ने हाज़िरीन को दुखी कर दिया और हज़रत अली रज़ि भी ख़ामोश रहे लेकिन बहरहाल फिर हज़रत उसमान रज़ि ने चाहा कि हाज़िरीन में से कोई शख़्स इस नाज़ुक अवस्था से निकलने का कोई मार्ग निकाले, मश्वरा दे। हज़रत अमरो बिन आस रज़ि उस मजलिस में मौजूद थे। उन्होंने कहा कि अल्लाह ने आप को इस से माफ़ रखा है। यह उस वक़्त की बात है जब आप मसलमानों के अमीर नहीं थे और चूँकि यह घटना आप के ख़िलाफ़त के ज़माना में नहीं हुई इसलिए आप पर उस की कोई ज़िम्मेदारी आइद नहीं होती लेकिन हज़रत उसमान रज़ि उनकी इस राय से सन्तुष्ट नहीं हुए और बेहतर यही समझा कि ख़ून का बदला अदा किया जाए। अत: फ़रमाया: मैं इन कतल होने वालों का वली हूँ इसलिए ख़ून बहा निर्धारित कर के अपने माल से अदा करूँगा।

(उद्धरित सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि लेखक मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक़ ,पृष्ठ 882-881 प्रकाशन इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

इस बारे में एक यह राय है

तारीख़ तबरी के अनुसार हज़रत उसमान रज़ि ने हज़रत उबैदुल्लाह को हर मिज़ान के बेटे के सपुर्द कर दिया था कि वह अपने बाप के बदले में क़िसास के रूप में क़तल कर दे लेकिन बेटे ने माफ़ कर दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस घटना को वर्णन फ़रमाया है और एक मसला के हल के वर्णन में इस के विस्तार में लिखा है जो मैं एक पिछले ख़ुत्बा में वर्णन कर चुका हूँ परन्तु यहां वज़ाहत के लिए दोबारा वर्णन करता हूँ कि क्या मक़्तूल काफ़िर मुआहिद के बदले में मुस्लमान क़ातिल को सज़ा दी जा सकती है? मुआहिद काफ़िर के बदले में मुस्लमान क़ातिल को सज़ा दी जा सकती है कि नहीं?

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि तबरी में क़ुमज़ुबन बिन हुर्मज़ान अपने पिता की क़तल की घटना वर्णन करता है। हुर्मज़ान एक ईरानी धनी और मजूसी धर्म का था और हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा सानी के क़तल की साज़िश में सम्मलित होने की शंका उस पर की गई थी। इस पर बिना तहक़ीक़ जोश में आकर उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ि ने इस को क़तल कर दिया। वह बेटा कहता है कि ईरानी लोग मदीना में एक दूसरे से मिलेजुले रहते थे जैसा कि नियम है कि दूसरे मुल्क में जाकर वतनियत स्पष्ट हो जाती है। एक दिन फ़िरोज़ क़ातिल जो हज़रत उमर रज़ि का था मेरे बाप से मिला और उसके पास एक ख़ंजर था जो दोनों तरफ़ से तेज़ किया हुआ था। मेरे बाप ने (यह हुर्मुज़ान का बेटा वर्णन कर रहा है कि मेरे बाप ने इस ख़ंजर को पकड़ लिया और इस से पूछा कि इस मुल्क में तो इस ख़ंजर से क्या काम लेता है अर्थात यह देश तो अमन का देश है। इस में हथियारों की क्या ज़रूरत है? उसने कहा कि मैं इस से ऊंट हँकाने का काम लेता हूँ। जब वे दोनों आपस में बातें कर रहे थे तो उस वक़्त किसी ने उनको देख लिया और जब हज़रत उमर रज़ि मारे गए तो उसने वर्णन किया कि मैंने ख़ुद हुर्मुज़ान को यह ख़ंजर फ़िरोज़ को पकड़ाते हुए देखा था। इस पर उबैदुल्लाह रज़ि हज़रत उमर रज़ि के छोटे बेटे ने जा कर मेरे बाप को क़तल कर दिया। जब हज़रत उसमान रज़ि ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने मुझे बुलाया और उबैदुल्लाह को पकड़ कर मेरे हवाले कर दिया और कहा कि यह मेरे बेटे ये तेरे बाप का क़ातिल है और तू हमारी तुलना में इस पर ज़्यादा

हक़ रखता है। अत: जा और इस को क़तल कर दे। मैंने उस को पकड़ लिया और शहर से बाहर निकला। रास्ता में जो शख़्स मुझे मिलता मेरे साथ हो जाता लेकिन कोई शख़्स मुक़ाबला न करता। वह मुझसे सिर्फ इतनी दरख़ास्त करते थे कि मैं उसे छोड़ दूं। अत: मैंने सब मुस्लमानों को सम्बोधित कर के कहा कि क्या मेरा हक़ है कि मैं उसे क़तल कर दूं? सबने जवाब दिया कि हाँ तुम्हारा हक़ है उसे क़तल कर दो, और उबैदुल्लाह को भला बुरा कहने लगे कि उसने ऐसा बुरा काम किया है। फिर मैंने पूछा कि क्या तुम लोगों को हक़ है कि उसे मुझसे छुड़ा लू? उन्होंने कहा कि हरगिज़ नहीं और फिर उबैदुल्लाह को बुरा-भला कहा कि उसने बिला सबूत उस के बाप को क़तल कर दिया। इस पर मैंने ख़ुदा और उन लोगों के लिए उस को छोड़ दिया और मुस्लमानों ने ख़ुशी और प्रसन्नता से मुझे अपने कंधों पर उठा लिया और ख़ुदा तआला की क़सम मैं अपने घर तक लोगों के सिरों और कंधों पर पहुंचा और उन्होंने मुझे ज़मीन पर क़दम तक नहीं रखने दिया। इस रिवायत से साबित है कि सहाबा का व्यवहार भी यही रहा है कि वे ग़ैर मुस्लिम के मुस्लिम क़ातिल को सज़ाए क़तल देते थे और ये भी साबित होता है कि चाहे किसी हथियार से कोई शख़्स मारा जाए वह मारा जाएगा। इसी तरह यह भी साबित होता है कि क़ातिल को गिरफ़्तार करने वाली और उस को सज़ा देने वाली हुकूमत ही है क्योंकि इस रिवायत से ज़ाहिर है कि उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ि को गिरफ़्तार भी हज़रत उसमान रज़ि ने ही किया और इस को क़त्ल के लिए हुर्मुज़ान के बेटे के सपुर्द भी उन्होंने ही किया था। न हुर्मज़ान के किसी वारिस ने इस पर मुक़द्दमा चलाया और न गिरफ़्तार किया।

इस जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि इस शंका को दूर कर देना भी ज़रूरी है कि क़ातिल को सज़ा देने के लिए क्या मक़्तूल के वारिसों के सपुर्द करना चाहिए जैसा कि हज़रत उसमान रज़ि ने किया या ख़ुद हुकूमत को सज़ा देनी चाहिए। अत: याद रखना चाहिए कि यह मामला एक गौण मामला है इसलिए इस को इस्लाम ने हर ज़माना की ज़रूरत के अनुसार व्यवहार में लाने के लिए छोड़ दिया है। क़ौम अपने तमद्दुन और हालात के अनुसार जिस तरीक़ा को अधिख लाभदायक देखे धारण कर सकती है और इस में कोई शक नहीं कि ये दोनों तरीक़े ही ख़ास ख़ास अवस्था में लाभदायक होते हैं।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर, भाग 2, पृष्ठ 359 से 361)

यह वज़ाहत करने के बाद अब मैं हज़रत उमर रज़ि की कुछ अन्य घटनाओं का वर्णन करता हूँ। वफ़ात के वक़्त हज़रत उमर रज़ि के विनय और विनय का क्या हाल था? इस बारे में उनके बेटे रिवायत करते हैं कि उन्होंने अपने बेटे को कहा कि मेरे कफ़न में मध्य मार्ग से काम लेना। अगर अल्लाह के पास मेरे लिए ख़ैर होगी तो मुझे इस से अच्छे लिबास से बदल देगा। अगर में इस के अतिरिक्त होऊंगा तो मुझसे छीन लेगा और छीनने में तेज़ी करेगा और यह भी कि मेरी क़ब्र के बारे में भी मध्य मार्ग से काम लेना। अगर अल्लाह के पास मेरे लिए इस में ख़ैर है तो इस को इतना बड़ा कर देगा जहां तक मेरी नज़र जाएगी और अगर में इस के अतिरिक्त हुआ तो वह उसे मुझ पर तंग कर देगा कि मेरी पसलियाँ टूट जाएँगी। और फिर मेरे जनाज़े के साथ किसी औरत को न लेकर जाना। मेरी ऐसी प्रशंसा न वर्णन करना जो मुझमें नहीं है क्योंकि अल्लाह मुझे ज़्यादा जानता है। और जब तुम मुझे ले जाने लगो तो चलने में भाग ी करना। अगर मेरे लिए अल्लाह के पास ख़ैर है तो तुम मुझे इस चीज़ की तरफ़ भेजते हो जो मेरे लिए ज़्यादा बेहतर है और अगर उस के सिवा हो तो तुम अपनी गर्दन से इस बुराई को टाल दोगे जो तुम उठाए हुए हो।

(अत्तबकातुल कुब्रा, भाग 3 पृष्ठ 273 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत1990 ई)

इसके इलावा यह भी वर्णन मिलता है कि हज़रत उमर रज़ि ने वसीयत की थी कि मुझे मुशक अर्थात कस्तूरी इत्यादि से ग़ुसल न देना।

(अत्तबकातुल कुब्रा, भाग 3 पृष्ठ 279 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत1990 ई)

हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ि से रिवायत है कि मैं हज़रत उमर रज़ि के पास गया जब उनका सिर उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि की जांघ पर था। हज़रत उमर रज़ि ने उनको अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि को कहा कि मेरा चेहरा ज़मीन पर रख दो। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा मेरी जांघ और ज़मीन बराबर ही है अर्थात इस में दूरी ही कितनी है। हज़रत उमर रज़ि ने दूसरी या तीसरी बार कहा कि तेरा भला हो मेरा चेहरा ज़मीन पर रख दो। फिर आप (हज़रत उमर रज़ि ने अपनी टांगों को एक दूसरे के साथ मिला लिया। रावी कहते हैं कि फिर मैंने आप (हज़रत उमर रज़ि को कहते हुए सुना कि मेरी और मेरी माँ की हलाकत होगी अगर अल्लाह तआला ने मुझे न बख़्शा यहां तक कि आप की वफ़ात हो गई।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,भाग 3 पृष्ठ 275-274 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत1990 ई)

हज़रत सिमाक हनफ़ी कहते हैं कि मैंने इब्न अब्बास रज़ि को यह कहते हुए सुना कि मैंने हज़रत उमर रज़ि से कहा अल्लाह ने आप के माध्यम से नए शहर आबाद किए और आप के माध्यम से बहुत सी विजय प्राप्त हुईं और आप के माध्यम से अमुक अमुक काम हुआ। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि मेरी तो तमन्ना है कि इस से ऐसे नजात पा जाऊं कि न मेरे लिए कोई बदला हो और न बोझ।

अर्थात इस बात पर फ़ख़र नहीं कि हाँ मैंने बड़े बड़े काम किए हैं और मेरे वक़्त में बड़ी विजय हुई हैं बल्कि अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और ख़शीयत ग़ालिब रहे और अपनी आख़िरत की फ़िक्र थी।

ज़ैद बिन असलम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उम्र रज़ि की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने फ़रमाया तुम लोग इमारत के बारे में मुझ पर शक करते हो। ख़ुदा क़सम! मुझे तो यह पसंद है कि मैं इस तरह नजात पा जाऊं कि लिऐ لَا عَلَيَّ وَلَا لِي न मुझ पर कुछ अज़ाब हो और न मेरे लिए कोई सवाब या बदला हो।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 267 वर्णन हजरत उम्र बिन अल्ख़त्ताब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि इस बारे में फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ि जैसा इन्सान जिन्होंने अपनी सारी उम्र ही मिल्लत-ए-इस्लामिया के ग़म और फ़िक्र में घुला दी। जिन्होंने हर मौक़ा पर उच्च से उच्च क़ुर्बानी की मानो कर्म के लिहाज़ से उनकी क़ुर्बानियां हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो की क़ुर्बानियों तक न पहुँचीं लेकिन इरादा और नीयत के लिहाज़ से सबकी बराबर थीं। जब अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो फ़ौत हुए तो हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो की आँखों से आँसू जारी हो गए और उन्होंने कहा ख़ुदा तआला अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो पर बरकत करे मैंने कई बार कोशिश की कि उनसे बढ़ जाऊं मगर कभी कामयाब न हुआ। एक बार रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया माल लाओ तो मैं अपना आधा माल ले गया और ख़्याल किया कि आज मैं अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो से बढ़ जाऊँगा मगर अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो मुझसे पहले वहां पहुंचे हुए थे और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चूँकि उनसे रिश्ता भी था और जानते थे कि उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा होगा इस लिए आप पूछ रहे थे अबू बकर रज़ि ! घर क्या छोड़ा? उन्होंने कहा घर में ख़ुदा और रसूल का नाम छोड़ा है। यह कह कर हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो रोते और फ़रमाते में उस वक़्त भी उनसे न बढ़ सका। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं यह उनकी क़ुर्बानियां थीं। हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो पहले भी देते रहते थे लेकिन जब ख़ास अवसर आया तो सब कुछ ला कर रख दिया। एक तरफ़ तो ये लोग थे और एक तरफ़ वे लोग हैं जिन्हें अपने माल के दसवें हिस्सा की क़ुर्बानी का भी अवसर नहीं मिलता और कहते हैं हम लुट गए। हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो जब फ़ौत होने लगे तो बार-बार उनकी आँखें गीली हो जातीं और कहते हे ख़ुदा तआला मैं किसी इनाम का अधिकारी नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ यही चाहता हूँ कि सज़ा से बच जाऊं।

(ख़ुतबात महमूद, भाग 10 पृष्ठ 24)

फिर तदफ़ीन और जनाज़े के बारे में वर्णन होता है कि आप के बेटे हज़रत अव्दुल्लाह रज़ि ने आप को ग़ुसल दिया। हज़रत इब्न उम्र रज़ि से रिवायत है कि मस्जिद नबवी में हज़रत उमर रज़ि की नमाज़ जनाज़ा अदा की गई और हज़रत सुहैब रज़ि ने आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। आप की नमाज़ जनाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिंबर और रौज़ा के दरमयान वाली जगह पर अदा की गई। हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि को क़ब्र में उतारने के लिए उसमान बिन अफ्फान रज़ि ,सईद बिन ज़ैद, सुहैब बिन सिनान और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,भाग 3 ,पृष्ठ 279 से 281 फ़ी ज़िक्र इस्तख़लाफ़ उम्र, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई (उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाबा ,भाग 4, पृष्ठ 166 दारुल कुतुब अल्इलमिया, तृतीय प्रकाशन 2003 ई)

इनके इलावा हज़रत अली रज़ि, हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर बिन

अवाम रिज़ का नाम भी आता है। (सय्यदना हज़रत उम्र फ़ारूक़ आज़म रज़ि लेखक मुहम्मद हुसैन हैकल , अनुवादक 868-867 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) (अल-फ़ारूक़ लेखक शिबली नुअमानी, पृष्ठ 169 दारुल-इशाअत कराची 1991 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "सुलहा के पहलू में दफ़न भी एक नेअमत है। हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो के बारे में लिखा है कि मौत की बीमारी में उन्होंने हज़रत आईशा रज़ी अल्लाह अन्हा से कहला भेजा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहलू में जो जगह है उन्हें दी जाए। हज़रत आईशा रज़ी अल्लाह अनहा ने कुर्बानी से काम लेकर वह जगह उनको दे दी तो फ़रमाया। مَا بَقِيَ لِيْ هَمٌّ بَعْدَ ذٰلِكَ। अर्थात इस के बाद अब मुझे कोई ग़म नहीं जबकि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रौज़ा में मदफ़ून हूँ।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 286)

एक और जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम फ़रमाते हैं कि " जो शख़्स बकमाल शौक़ अल्लाह के दामन से जुड़ जाता है तो वह उसे हरगिज़ नष्ट नहीं करता चाहे दुनिया-भर की हर चीज़ उस की दुश्मन हो जाए। और अल्लाह का अभिलाषी किसी नुक़्सान और तंगी का मुँह नहीं देखता। और अल्लाह सादिक़ों को बिना सहायता तथा सहायक के नहीं छोड़ता। अल्लाहु-अकबर इन दोनों (अबू बकर रज़ि और उमर रज़ि के सिदक़-ओ-ख़ुलूस की क्या बुलंद शान है वे दोनों ऐसे (मुबारक मदफ़न में दफ़न हुए कि अगर मूसा और ईसा ज़िन्दा होते तो रशक से वहां दफ़न होने की तमन्ना करते लेकिन यह स्थान केवल इच्छा से तो नहीं प्राप्त हो सकता और न केवल इच्छा से प्रदान किया जा सकता है बल्कि यह तो इज़्ज़त वाले अल्लाह की तरफ से से एक स्थायी रहमत है और यह रहमत केवल उन्हीं लोगों की तरफ़ रुख़ करती है जिनकी तरफ़ अल्लाह की इनायत होती हो।

(सिर्रुल् ख़िलाफ़ा , रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 8 पृष्ठ 346 उर्दू अनुवाद सिर्रुल् ख़िलाफ़ा , पृष्ठ 78)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि "जब हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो फ़ौत होने लगे तो उन्होंने इस बात के लिए बड़ी तड़प ज़ाहिर की कि आप को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में दफ़न होने की जगह मिल जाए। अत: उन्होंने हज़रत आईशा रज़ी अल्लाह अन्हा से कहला भेजा कि अगर इजाज़त दें तो मुझे आप के पहलू में दफ़न किया जाए। हज़रत उमर रज़ि वह इन्सान थे जिनके बारे ईसाई इतहिासकार भी लिखते हैं कि उन्होंने ऐसी हुकूमत की जो दुनिया में और किसी ने नहीं की। वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां हैं " अर्थात ईसाई इतिहासकार " परन्तु हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो की प्रशंसा करते हैं। ऐसी प्रशंसा हरवक़त की संहबत में रहने वाला मरते वक़्त यह इच्छा रखता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो के क़दमों में"जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत में रहा मरते वक़्त भी यह हसरत करता है कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में उसे जगह मिल जाए। अगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी कर्म से भी यह बात ज़ाहिर होती कि आप ख़ुदा की रज़ा के लिए काम नहीं करते तो क्या हज़रत उमर रज़ि जैसा इन्सान इस स्तर को पहुंच कर कभी यह इच्छा करता कि आप के क़दमों में जगह पाए।"

(दुनिया का मुहसिन,अनवारुल उलूम, भाग 10 पृष्ठ 262)

अत: यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान है जिसके कारण से हज़रत उमर रज़ि की भी इच्छा हुई कि आप के क़दमों में जगह पाए।

हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात

हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात के वक़्त क्या उम्र थी? इस बारे में भी विभिन्न राय हैं। जन्म के सन के अनुसार विभिन्न रिवायते हैं। इसलिए आप की वफ़ात के समय उम्र के बारे में विभिन्न बातें हैं। अत: तारीख़ तबरी, उसदुल ग़ाबह, अलबदाया वन्नहाया, रियाज़ अन्नज़र, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा की विभिन्न रिवायतों में आप की उम्र 53 साल, 55 साल, 57 साल, 59 साल, 61 साल, 63 साल और 65 साल वर्णन हुई है।(तारीख़ अत्तिबरी अनुवाद ,भाग 3 हिस्सा पृष्ठ 211 प्रकाशन दारुल-इशाअत कराची 2003 ई)(उसदुल ग़ाबह , भाग 4 पृष्ठ 166 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)(अलबिदाया वन्नहाया भाग 8, पृष्ठ 192 से 194 प्रकाशन दार हिज्र 1998 ई (रियाज़ अन्नज़र, पृष्ठ 419-418 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत) (तारीख़ुल ख़लफ़ा लेखक इमाम जलालुद्दीन सेयूती (अनुवाद पृष्ठ 168 मुमताज़ अकैडमी लाहौर)

अलबत्ता सही मुस्लिम और तिरमिज़ी की रिवायत के अनुसार आप की उम्र तरेसठ साल वर्णन की गई है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत है कि वफ़ात के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र 63 वर्ष थी। हज़रत अबूबकर रज़ि की वफ़ात के वक़्त उम्र 63 बरस थी और हज़रत उमर रज़ि की भी वफ़ात के वक़्त उम्र 63 बरस थी। (सही मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब कम सिन उन्नबी यौम क़बज़, हदीस 6091)(सुनन अत्तिरमज़ी, किताबुल मनाकिब, बाब फ़ी सुंन उन्नबी (सल.) कम कान हीन मात, हदीस 3653)

हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात पर कुछ सहाबा किराम के तास्सुरात के बारे में ये वर्णन हुआ है। हज़रत इब्न अब्बास रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि का मुबारक शरीर जनाज़े के लिए रखा गया और लोग उनके पास खड़े हो गए। उनके उठाने से पहले दुआ करने लगे। फिर नमाज़ जनाज़ा पढ़ने लगे और मैं भी उनमें मौजूद था तो एक शख़्स ने मेरा कंधा पकड़ कर चौंका दिया। क्या देखता हूँ कि हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि हैं। आप ने हज़रत उमर रज़ि के लिए रहमत की दुआ की और कहा कि आप ने कोई ऐसा शख़्स नहीं छोड़ा जो आप से बढ़कर मुझे इस लिहाज़ से प्यारा हो कि मैं इस के कर्मों जैसे कर्म करते हुए अल्लाह से मिलूं। ख़ुदा की क़सम मैं यही समझता था कि अल्लाह आप को भी आप के साथियों के साथ ही रखेगा अर्थात हज़रत उमर रज़ि को भी आप के साथियों के साथ ही रखेगा और मैं जानता हूँ कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत बार मैं यह सुना करता था, आप फ़रमाया करते थे कि ذَهَبْتُ أَنَا وَأَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَدَخَلْتُ أَنَا وَأَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَخَرَجْتُ أَنَا وَأَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ۔ मैं और अबू बकर और उमर गए। मैं और अबू बकर और उमर दाख़िल हुए। मैं और अबूबकर और उमर निकले

(सही अलबख़ारी ,किताबुल फ़ज़ाइल अस्सहाब उन्नबी बाब मनाक़िब उम्र बिन अल्ख़त्ताब ,हदीस 3685)

अर्थात विभिन्न घटनाएं वर्णन करते हुए आप ने यह वाक्य फ़रमाया करते थे

जाफ़र बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उम्र बिन ख़ताब रज़ि को ग़ुसल और कफ़न दे दिया गया और आप को चारपाई पर रख दिया गया तो हज़रत अली रज़ि ने उनके पास खड़े हो कर आप की प्रशंसा फ़रमाई और कहा अल्लाह की क़सम! मुझे इस चादर में ढके हुए इन्सान से ज़्यादा सारी धरती पर पर कोई शख़्स पसंद नहीं कि मैं इस के नामा आमाल के साथ ख़ुदा से मिलूं।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 282 वर्णन हज़रत उम्र बिन अल्ख़त्ताब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अबू मख़्लद से रिवायत है कि हज़रत अली इब्न अबी तालिब रज़ि ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत नहीं हुए थे कि हमने जान लिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अबू बकर रज़ि हम में अफ़ज़ल हैं और हज़रत अबू बकर रज़ि फ़ौत नहीं हुए थे कि हमने जान लिया कि हज़रत अबू बकर रज़ि के बाद हम में हज़रत उमर रज़ि सबसे अफ़ज़ल हैं।

(सीरत उम्र बिन अल्ख़त्ताब लेखक इब्न जोज़ी ,पृष्ठ 212 मकतबा मिसरिया अल-अज़हर)

ज़ैद बिन वह्ब वर्णन करते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि के पास आए। आप हज़रत उमर रज़ि का वर्णन करते हुए इतना रोया कि आप के आँसू गिरने से कंकर भी तर हो गए। फिर आप ने कहा हज़रत उमर रज़ि इस्लाम के लिए मज़बूत क़िला थे। लोग इस में दाख़िल होते और बाहर न निकलते। एक मज़बूत क़िला थे लोग इस में दाख़िल होते और बाहर न निकलते। जब आप की वफ़ात हुई तो इस क़िला में दराड़ पड़ गई और लोग इस्लाम से निकल रहे हैं।

(अत्तबकातुल कुब्रा, भाग 3पृष्ठ 283 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अब्बू वायल से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने कहा कि अगर हज़रत उमर रज़ि का इलम तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाए और बाक़ी समस्त इन्सानों का इलम दूसरे पलड़े में तो हज़रत उमर रज़ि का पलड़ा भारी होगा। अबू वायल ने कहा कि मैंने उस का वर्णन इब्राहीम से किया तो उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस से भी बढ़कर कहा कि मैंने पूछा क्या कहा है? उन्होंने कहा कि जब हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात हो गई तो उन्होंने यह कहा कि इलम के दस में से नौ हिस्से जाते रहे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाबा ,भाग 3 पृष्ठ 651 उम्र बिन अल्ख़त्ताब रज़ि ,प्रकाशन दारुल फिक्र बेरूत 2003 ई)

हज़रत अनस रज़ि ने कहा कि जब हज़रत उम्र बिन ख़ताब रज़ि की शहादत हुई तो हज़रत अबू तलहा रज़ि ने कहा अरब में कोई शहरी या बदवी घर ऐसा नहीं मगर उसके घर को हज़रत उमर रज़ि की शहादत से नुक़्सान पहुंचा है। (अत्तबकातुल कुब्रा ,भाग 3 पृष्ठ 285 वर्णन इस्तिख़लाफ़ उम्र, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 1990 ई) अर्थात हर एक की इतनी मदद करते थे कि यक़ीनन उनको नुक़्सान पहुँचेगा। ये लोग प्रभावित होंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि के जनाज़े के बाद हज़रत उमर रज़ि की चारपाई के पास खड़े हो कर कहा हे उमर रज़ि आप क्या ही उत्तम इस्लामी भाई थे। हक़ के लिए दाता और बातिल के लिए कंजूस थे। रज़ामंदी के इज़हार के वक़्त आप राज़ी होते और ग़ुस्सा के वक़्त आप ग़ुस्सा करते। पाक नज़र और खुले दिल वाले थे। न व्यर्थ प्रसंसा करने वाले थे और न ही ग़ीबत करने वाले थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 282 वर्णन हजर उम्र बिन अल्ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 1990 ई)

एक रिवायत में है कि जब हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात पर हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि रोए तो किसी ने कहा हे अबुल अअवर आप क्यों रोते हैं? उन्होंने कहा मैं इस्लाम पर रोता हूँ। यक़ीनन हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात से इस्लाम में ऐसा रख़्ना पैदा हो गया है जो क़यामत तक भरेगा नहीं ।

(अल्कुब्रा, भाग 3 पृष्ठ 284 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत इब्न-ए-उम्र वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में हम लोग कहा करते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में आप के बाद सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबूबकर हैं। फिर हज़रत उम्र, फिर हज़रत उसमान हैं रज़ी अल्लाह अन्हुम।

(सुनन अबी दाऊद ,किताबुस्सुन्नत ,बाब अत्तफ़ज़ील ,हदीस 4628)

हज़रत हज़ैफ़ह रज़ि ने कहा कि हज़रत उमर रज़ि के दौर में इस्लाम की मिसाल उस शख़्स की तरह थी जो मुसलसल तरक़्क़ी की राह पर चलता था। जब आप की शहादत हो गई तो वह पीठकी तरफ फिर गया और निरन्तर पीछे जाता जा रहा है।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,भाग 3 पृष्ठ 285 वर्णन इस्तिख़लाफ़ उम्र, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत उमर रज़ि की पत्नियों और औलाद के बारे में वर्णन हुआ है कि आप की विभिन्न समयों में दस बीवियां थीं जिनमें से नौ बेटे और चार बेटियां हुईं। उनमें से एक हज़रत हफ़सा रज़ी अल्लाह अन्हा हैं जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी बनने का सौभाग्य मिला। हज़रत ज़ैनब बिन्त मज़ावन रज़ि पहली थीं। यह हज़रत उसमान बिन मज़ावन रज़ि की बहन थीं। उनसे आपकी औलाद अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान अकबर और हज़रत हफ़सा रज़ि हैं। हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त अली बनि अबूतालिब उनसे आप की औलाद ज़ैद अकबर और रुक़य्या हैं। मुलैक़ा बिन्त जरवल उनको उम्मे कुलसूम भी कहते हैं। उनसे आप की औलाद ज़ैद असग़र और उबैदुल्लाह हैं। कुरैबह बिन्त अबू उमय्या मख़्ज़ूमी चूँकि मुलैक़ा और क़ुरैबह ईमान नहीं लाई थीं इसलिए हज़रत उमर रज़ि ने छः हिज्री में इन दोनों को तलाक़ दे दी थी। हज़रत जमीला बिन्त साबित उनका नाम आसिया था आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबदील कर के जमीला रख दिया था। यह बदरी सहाबी आसिम बिन साबित की बहन थीं। उनसे आपकी औलाद आसिम हैं। लहुय्यह से आपकी औलाद अब्दुर्रहमान रज़ि हैं। एक और आप की बीवी के बारे में कहा जाता है कि उम्मे वलद हैं अर्थात कि वह लौंडी जिससे शादी की जाती है। इस की औलाद हो तो वह आज़ाद हो जाती है। एक और उम्मे वलद थीं जिनके गर्भ से अब्दुर्रहमान असग़र पैदा हुए। हज़रत उम्मे हकीम बिन्त हारिस से आप की औलाद फ़ातिमा थीं। फ़ुकेहा से आप की औलाद ज़ैनब थीं। हज़रत आतका बिन्त ज़ैद इन से आपकी औलाद अयज़ है।

(अलख़ुलफ़ा अर्रशदून लेखक मुहम्मद रज़ा ,पृष्ठ 100 प्रकाशन दारुल-किताब अलअरबी बेरूत 2004 ई) (अल-फ़ारूक़ लेखक शिबली नुअमानी, पृष्ठ 404 प्रकाशन दारुउल-इशाअत कराची1991 ई)(उसदुल ग़ाबह ,भाग 7 पृष्ठ 53 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लुबनान 2003 ई)

मशहूर मुस्तश्रिक़ ऐडवर्ड गिबन हज़रत उमर रज़ि की प्रशंसा में लिखता है कि हज़रत उमर रज़ि की परहेज़गारी और विनम्रता हज़रत अबू बकर रज़ि की नेकियों से कम न थी। आप के खाने में जौ की रोटी और खजूरें ही होती थीं। पानी आप का पीना वाली वस्तु थी। आप ने लोगों को तब्लीग़ की इस हाल में कि आप का लिबास बारह जगहों से फटा हुआ था। ईरानी गवर्नर जिन्होंने इस फ़ातिह को ख़िराज-ए-अक़ीदत पेश किया उन्होंने आप को मस्जिद नबवी की सीढ़ीयों पर फ़क़ीरों के साथ सोते देखा। अर्थ व्यवस्था स्रोत होती है आज़ाद विचारों का और आय में वृद्धि के कारण उमर रज़ि इस योग्य हुए कि मख़लसीन की भूतकाल और वर्तमान की सेवाओं के कारण उन के लिए वज़ीफ़ा का मुंसिफ़ाना और स्थायी निज़ाम क़ायम कर सकें। अपने वज़ीफ़ा से बेनयाज़ थे। आप ने अब्बास (नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा के लिए सबसे पहला और ज़रूरत के लिए काफ़ी पच्चीस हज़ार दिरहम या चांदी के टुकड़े वज़ीफ़ा निर्धारित किया। जंग बदर में शामिल होने वाले बुज़ुर्ग सहाबा में से हर एक के लिए पाँच हज़ार दिरहम का वज़ीफ़ा निर्धारित किया। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अन्य सहाबा को सालाना इनाम के तौर पर तीन हज़ार चांदी के टुकड़ों से नवाज़ा गया।

(The decline and fall of the Roman empire. by Edward Gibbon. vol. 3 chapter LI. page 178. London)

माईकल ऐच हार्ट ने अपनी किताब The Hundred में इतिहास की सौ प्रभावकारी शख़्सियात का वर्णन किया है और पहले नम्बर पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लिया है और इस किताब में 52 वें नंबर पर हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का वर्णन किया है। यह लिखता है कि उम्र बिन ख़त्ताब मुस्लमानों के दूसरे ख़लीफ़ा और शायद मुस्लमानों के सबसे महानतम ख़लीफ़ा थे। आप मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नौजवान हमअसर और इन्हीं की तरह मक्का में पैदा हुए थे। आप की पैदाइश का साल मालूम नहीं शायद 586 ई के क़रीब का ज़माना था। आरम्भ में उमर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के और आप के नए धर्म के सबसे बड़े दुश्मनों में से थे परन्तु अचानक उमर रज़ि ने इस्लाम क़बूल कर लिया और इसके बाद उस के मज़बूत तरीन समर्थकों में से हो गए। सेंट पाल के ईसाई होने से इस की समानता हैरान करने वाली है। उमर रज़ि भी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब तरीन परामर्श देने वालों में से हो गए और आपकी वफ़ात तक ऐसे ही रहे।

632 ई में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिना अपना जांनशीन नामज़द किए फ़ौत हो गए। उमर रज़ि ने शीघ्र अबू बकर रज़ि के ओहदा ख़िलाफ़त के लिए समर्थन किया की जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीबी साथी और ख़ुसर थे जिसके कारण से इक़तिदार की कश्मकश टल गई। यह तो अपने अंदाज़ में लिख रहा है और यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि किस तरह लोगों ने इकट्ठे होकर आप को ख़लीफ़ा चुन लेकिन बहरहाल दुनियावी नज़र से देखते हुए कहता है कि उनके ख़ुसर की बैअत कर ली जिसके कारण से इक़तिदार की कश्मकश टल गई और इस से अबू बकर रज़ि इस योग्य हुए कि उनको आम तौर पर पहला ख़लीफ़ा माना गया अर्थात कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जांनशीन। अबू बकर रज़ि एक कामयाब मार्गदर्कन थे लेकिन वह सिर्फ दो साल तक ख़लीफ़ा के तौर पर सेवा करने के बाद फ़ौत हुए। अलबत्ता उन्होंने अपने बाद मुईन तौर पर उमर रज़ि को अपना जांनशीन नामज़द किया। उमर रज़ि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुसर थे इस वजह से एक बार फिर इक़तिदार की जंग टल गई। फिर यह उस को दुनियावी रँग देना चाहता है। लेकिन प्रशंसा बहरहाल कर रहा है। उम्र 634 ई में ख़लीफ़ा बने और 644 ई तक इक़तिदार अर्थात ख़िलाफ़त में रहे जब उन्हें एक फ़ारसी ग़ुलाम ने मदीना में शहीद कर दिया। मृत्यु के बिस्तर पर उमर रज़ि ने छः लोगों की एक कमेटी को मुक़र्रर किया जो

उनका जांनशीन चुन लें और इस बार एक बार फिर मुसल्लह इक़तिदार की जंग को टाल दिया। इस कमेटी ने उसमान रज़ि को तीसरा ख़लीफ़ा निर्धारित किया जिन्होंने 644 से 656 ई तक हुकूमत की।

फिर यह लिखता है कि यह हज़रत उमर रज़ि का ही दस साला ख़िलाफ़त का दौर था जिसमें अरबों ने सबसे प्रमुख विजय प्राप्त कीं। आप की ख़िलाफ़त के थोड़े समय ही में अरब फ़ौज ने शाम और फ़लस्तीन पर हमला किया जो उस वक़्त बाज़ नितीनी सलतनत का हिस्सा थे। जंग यरमौक 636 ई में अरबों ने बाज़नितीनी फ़ौजों के ख़िलाफ़ ऐसी फ़तह हासिल की जिससे उनकी कमर टूट गई। दमिशक़ भी इसी साल फ़तह हुआ और यरूशलम ने भी दो साल बाद हथियार डाल दिए। 641 ई तक अरब समस्त फ़िस्तीन और शाम को फ़तह कर चुके थे और मौजूदा दौर के तुर्की में पेशक़दमी कर रहे थे। 639 ई में अरब फ़ौजें मिस्र में दाख़िल हो गईं जो कि बाज़नितीनी हुकूमत के ही अधीन था। तीन साल के अंदर अंदर अरब मुकम्मल तौर पर मिस्र पर फ़तह पा चुके थे। इराक़ पर अरबों के हमले जो उस वक़्त फ़ारसियों की सासानी सलतनत का एक हिस्सा था वह हज़रत उमर रज़ि के मस्नद ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ होने से भी पहले शुरू हो चुके थे। अरबों की प्रमुख फ़तह जंग क़ादसिया 637 ई में कामयाबी की सूरत में हज़रत उमर रज़ि के दौर-ए-ख़िलाफ़त में हुई। 641 ई तक तमाम इराक़ अरबों के क़ब्ज़ा में आ चुका था और यहीं पर बस नहीं, अरब फ़ौजों ने फ़ारस पर भी हमला कर दिया था और नहाविंद के युद्ध में 642 ई ईसवी में उन्होंने आख़िरी सासानी बादशाहों की फ़ौजों को फ़ैसलाकुन शिकस्त दे दी थी

जिस वक़्त उम्र की वफ़ात हुई यानी 644 ई में मग़रिबी ईरान का बेशतर हिस्सा क़ब्ज़ा में आ चुका था। हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात पर भी अरब फ़ौजों का जोश मांद ना पड़ा । मशरिक़ में उन्होंने शीघ्र ही फ़ारस की फ़तह सम्पूर्ण कर ली जबकि पश्चिम में उत्तरी अफ़्रीक़ा में क़दम बढ़ाते रहे। फिर लिखता है कि जितना उमर रज़ि की फ़ुतूहात की वुसअत का महत्व है उसी क़दर उन विजयों की पाएदारी भी अहम है। यद्यपि ईरान की आबादी ने इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन अन्त में उन्होंने अरबों की हुक्मरानी से आज़ादी हासिल कर ली लेकिन शाम ,इराक़ और मिस्र ने ऐसा नहीं किया। वह प्राय अरब तहज़ीब में ढल गए और आज तक यही अवस्थ है। फिर लिखता है कि निसन्देह उमर रज़ि को पालिसीयां बनानी पढ़ें ताकि वह इस महान सलतनत का प्रबन्ध कर सकें जो उनकी फ़ौजों ने फ़तह की थीं। उन्होंने फ़ैसला किया कि अरबों को इन इलाक़ों में जो उन्होंने फ़तह किए हैं एक ख़ुसूसी फ़ौजी मुक़ाम हासिल हो और वे स्थानीय लोगों से अलग छावनियों में रहें। मह्कूम लोगों को अपने मुस्लमान फ़ातहीन को जो अधिकतर अरब थे एक टेक्स देना होता था। बाक़ी उन्हें सम्पूर्ण रूप से अमन प्राप्त था। इस के इलावा उन पर कोई और ज़िम्मेदारी लागू नहीं होती थी। विशेष रूप से उन्हें इस्लाम क़बूल करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता था। उपरोक्त बात से यब साबित है कि अरबों की विजय मुक़द्दस जंगों से ज़्यादा क़ौमी नौईयत की थीं। यद्यपि मज़हबी भाग मुकम्मल रूप से समाप्त नहीं था। उमर रज़ि की कामयाबियां निसन्देह प्रभावित करने वाली हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आप इस्लाम के फैलाओ में प्रमुख शख़्सियत थे। आप की तेज़-रफ़्तार विजयों के बिना शायद यह मुम्किन न होता कि इस्लाम इतना फैलता जितना आज वह फैला हुआ है। इसी तरह यह कि हज़रत उमर रज़ि के दौर में फ़तह किए गए इलाक़े अब तक अरब ही हैं। निसन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि सबसे प्रमुख कारण थे उन्हीं को बहुत अधिक उन्नतियों का क्रेडिट जाता है परन्तु हज़रत उमर रज़ि के किरदार को नज़रअंदाज करना भी बहुत बड़ी ग़लती होगी। आप की विजय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रभाव में रहने के कारण से परिणाम स्वरूप अपने आप नहीं हुई थीं कुछ वुसअत तो मुक़द्दर थी लेकिन इस ग़ैरमामूली सीमा तक नहीं जहां तक उमर रज़ि की शानदार क़ियादत में हुई। फिर लिखता है कि शायद यह हैरत का कारण हो कि उमर रज़ि जो पश्चिम में एक नामालूम शख़्सियत हैं को शारलेमन (Charlemagne) और जुलिअस सीज़र जैसी प्रमुख शख़्सियात से बलंद तर मर्तबा दिया जाए परन्तु उमर रज़ि के दौर में अरबों की विजय शारलेमन और जुलिअस सीज़र के मुक़ाबले में आकार और वक़्त की तुलना में बहुत ज़्यादा अहम हैं।

(The 100: A Ranking of the Most Influential Persons in History by Michael H. Hart pages 271 to 275 Golden Books centre Sdn. Bhd. 2008)

फिर एक प्रोफ़ैसर हैं फ़लिप.के हटी (Philip.K.Hitti) अपनी किताब History of the Arabs में लिखते हैं कि सादा , किफ़ायत शिआर और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुतहर्रिक और योग्य उत्तराधिकारी उमर रज़ि जो कि बलंद क़ामत और मज़बूत शरीर वाले और सिर पर कम बालों वाले थे, आप ने ख़िलाफ़त के बाद कुछ वक़्त तक व्यापार के द्वारा गुज़र बसर की कोशिश की। आप ने अपनी सारी उम्र एक देहाती शेख़ की तरह सादगी से गुज़ारी। वास्तव में उम्र को, जिनका नाम मुस्लिम रिवायतों के अनुसार आरम्भ में इस्लाम में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे महान था, मुस्लमान इतिहासकारों ने उनके तक़्वा, इन्साफ़ और सादगी के लिए बतौर उदाहरण पेश किया है और ख़लीफ़ा की शख़्सियत में होने वाली समस्त ख़ूब्यों के रूप में पेश किया है। फिर लिखता है कि आप का बुलन्दो किरदार समस्त ज़मीर वाले जांनशीनों के लिए पैरवी का नमूना बन गया। बताया जाता है कि आप के पास केवल एक क़मीस और एक चोग़ा था और दोनों पर पैवंद सपष्ट रूप से नज़र आते थे। आप खजूर के पत्तों के बिस्तर पर सो जाते। आप को ईमान की पुख़्तागी ,इन्साफ़ की बाला-ए-दस्ती ,अरबों और इस्लाम के उत्थान और सलामती के इलावा कोई और ख़्याल न था।

(History of The Arabs by Philip K. Hitti ,10th edition, page 175, London 1989)

यह वर्णन अभी चल रहा है। इंशा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

इस वक़्त मैं कुछ जनाज़ों का,मरहूमीन का वर्णन करूँगा जिसमें से पहला वर्णन आदरणीया साहबज़ादी आसिफ़ा मसूदा बेगम साहिबा का है जो डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहिब पुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की पत्नी थीं। पिछले दिनों 92 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नवासी और हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ि की सबसे छोटी साहबज़ादी थीं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की बहू थीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया थीं। उनके वारिसों में एक बेटा और चार बेटियां हैं। उनके बेटे तारिक़ अकबर कहते हैं कि अम्मी हमेशा जमाअत और ख़लीफ़ा वक़्त की वफ़ादार रहीं। हमेशा कोशिश होती थी कि जमाअत की ख़िदमत करें और अपनी वसीयत का हक़ अदा करें। आपने अपनी ज़िंदगी में ही अपना हिस्सा जायदाद अदा कर दिया था। हर साल मरहूमीन की तरफ़ से भी चंदा अदा करती थीं। ग़रीबों की दिल खोल कर और खुफ़यिा तौर पर मदद करती थीं। नौकरों के बारे में मुझे अक्सर कहा करती थीं कि ये तुम्हारे बहन भाईयों की तरह हैं उनका ख़्याल रखा करो। रिश्तों को निभाने की कोशिश करती थीं और कोशिश करती थीं कि उनसे किसी को तकलीफ़ न पहुंचे। नमाज़ों की पाबंद, हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ उल-ईबाद को अदा करने वाली थीं।

उनकी बहू नईमा साहिबा कहती हैं कि जब अमरीका में हमारे घर की तामीर सम्पूर्ण हुई तो फ़रमाने लगीं कि इस घर में सामान लाने से पहले इस घर के हर कमरे और गोशे में नवाफ़िल अदा करना। फिर कहती हैं कि मेरी माता की वफ़ात के बाद मुझे कहने लगीं कि तुम यह नह समझना कि तुम अब बिना माँ के हो। मैं तुम्हारी माँ हूँ और वास्तव में उनकी मुहब्बत भरी और दुआ करने वाली प्यारी शख़्सियत ने मुझे अपनी बेटीयों से बढ़कर मुहब्बत दी। फिर हमेशा यह नसीहत करती थीं कि ख़िलाफ़त से कभी सम्बन्ध न तोड़ना और फिर मुझ से जो उन का रिश्ता है, विभिन्न रिश्ते थे क्योंकि यह मेरी दादी की दूसरी माता से बहन भी थीं इस लिहाज़ से दादी भी कहलाती थीं और ख़ाला भी बनती थीं। रिश्ता में फूफी भी बनती थीं। लेकिन कहती हैं कि इन सब रिश्तों के बावजूद मैं बस समय के ख़लीफ़ा की आज्ञाकारी हूं और यह सिर्फ़ बातें ही नहीं हैं बल्कि वाक़ई उन्होंने इस सम्बन्ध को जो ख़िलाफ़त के साथ उनका सम्बन्ध है इस को वफ़ा के साथ निभाया। बहुत अधिक सदक़ा तथा ख़ैरात करने वाली थीं। तहरीक जदीद का चंदा बुज़ुर्गान और टीचरों बल्कि यहां तक कि कादियान के मुलाज़िमों की तरफ़ से भी अदा किया करती थीं। मुलाज़िम को जब कोई विदा होता तो काफ़ी दे दिला कर रुख़स्त करतीं और यह भी कहा करती थीं कि अगर कोई ग़लती हो तो माफ़ कर देना।

उनकी एक बेटी शाहिदा कहती हैं छोटे होते से ही अम्मी ने हमारा अल्लाह तआला से इस तरह परिचय करवा दिया कि कहा करती थीं कि जूते का तस्मा

भी चाहिए तो ख़ुदा तआला से माँगो और दुआओं पर ज़ोर दो और ख़िलाफ़त के सम्मान की तरफ़ बहुत नसीहत किया करती थीं और जब भी ख़िलाफ़त के चुनाव का वक़्त आया तो कहती थीं कि जो भी ख़लीफ़ा चुना जाए सम्पूर्ण फ़रमांबर्दारी से उस की इताअत करनी है और यह भी कहा करती थीं कि यह दुआ करो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हरी टहनी बनो, सूखी टहनी न बन जाना और किसी के लिए ठोकर का कारण न बनना।

फिर उनकी बेटी नुसरत जहां कहती हैं कि हमारे बचपन से ही तर्बीयत का पहलू हमेशा सम्मुख रखतीं। क़ुरआन करीम पढ़ रही होतीं तो किसी आयत पर रुक जातीं और हमें उस का अर्थात समझातीं या कोई और नसीहत करतीं। इस हवाले से हमेशा बुज़ुर्गों का ज़िक्रे ख़ैर करती रहतीं। बहुत सी अनमोल और नसीहत वाले क़िस्से उनको याद थे जो अक्सर वह दुहराती रहती थीं और हमें बताती रहती थीं।

सदर साहिबा लजना ज़िला लाहौर फौज़िया शमीम साहिबा जो हज़रत नवाब अमतुल-हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ि की बेटी भी हैं वह कहती हैं कि ग़ैरमामूली ख़ातून थीं। जब कभी आपको चंदे की तहरीक की जाती और उनको शरह सदर हो जाता तो दिल खोल कर चंदा अदा करती थीं। कभी ज़बानी और कभी चिट पर लिख कर चंदे का वादा कर दिया करती थीं और बड़ी रक़म चंदे के लिए अदा करती थीं और साथ यह कहती थीं कि कहीं उस का वर्णन न हो। बड़ी सादा ख़ातून थीं। अपने ज़ाती मुामलों में बहुत सादा बल्कि कुछ लोग उन्हें कंजूस समझते थे लेकिन ख़ुद सादा रहती थीं। सदक़ा तथा ख़ैरात में बहुत खुला हाथ था। कहती हैं कि एक बार मैंने अपने इलाक़े में मस्जिदों के लिए तहरीक की और उन से वर्णन किया तो एक बहुत बड़ी रक़म क़रीबन एक करोड़ रुपए की मुझे चंदे के लिए भिजवा दी।

फिर उनकी नवासी राज़िया कहती हैं। बहुत सी नेक बातें और हिदायतें बचपन से ही हमें क्या करती थीं। छोटी उम्र से ही नेक नसीब होने की दुआ करने की नसीहत करती थीं। नेक पति मिलने के लिए दुआ के लिए नसीहत किया करती थीं और छोटी उम्र में शर्म आती तो कहती थीं कि अल्लाह तआला से कोई शर्म नहीं होनी चाहिए इस से खुल कर माँगो। धार्मिक किताबें बाक़ायदगी से पड़तीं और अक्सर गाड़ी में सफ़र के दौरान दुआओं और दुआइया शेरों को पढ़ती रहा करती थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को और अगली नस्ल को भी उनके नक़श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

फिर दूसरा वर्णन आदरणीया क्लारा आपा साहिबा पत्नी रोलान सासन बाईफ़ साहिब साबिक़ अमीर जमाअत कज़ाकिस्तान का है जो पिछले महीने फ़ौत हो गई थीं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजिऊन। उताउर्रब चीमा साहिब कज़ाकिस्तान के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि 1994,95 ई में उन्होंने बैअत की तौफ़ीक़ पाई। कज़ाकिस्तान के एक बहुत प्रसिद्ध घराने से सम्बन्ध रखती थीं। उनके पति आदरणीय रोलान सासन बाईफ़ साहिब जमाअत कज़ाकिस्तान के पहले अमीर जमाअत और सदर जमहूरीया के एडवाइज़र भी रह चुके हैं और कज़ाख़ भाषा के मारूफ़ साहित्यकार भी हैं। ख़ुद क्लारा साहिबा भी बहुत अच्छी अनुवादक़ और लेखिका थीं। कज़ाकिस्तान में जमाअत की स्थापना का सेहरा क्लारा साहिबा और उनके पति मुहतरम रोलान साहिब के सिर है। आदरणीया क्लारा साहिबा ने क़ुरआन करीम का कज़ाख़ भाषा में अनुवाद भी किया जो बहरहाल प्रकाशित तो नहीं किया जा सका लेकिन इस से उनकी जमाअत के साथ मुहब्बत बहुत स्पष्ट थी कि किस तरह वह अहमदियत को कज़ाकिस्तान में फलता फूलता देखना चाहती थीं और इस के लिए अपनी शक्ति के अनुसार कोशिश करती थीं। स्थानीय मुल्ला लोग विरोध में इस ख़ानदान का वर्णन करते हुए इस बात का इज़हार भी ज़रूर किया करते हैं कि ये अहमदी हैं और कज़ाकिस्तान में अहमदियत को लाने वाले यही लोग हैं। मरहूमा क्लारा साहिबा की बेटी मरहब असासीन बायो लिखती हैं कि वह बहुत अच्छी अनुवादक़ थीं। कसीर जहती और मज़बूत शख़्सियत की मालिक थीं। वह बहुत साफ़ और चमकदार किरदार वाली थीं। 1995 ई में लंदन में क़ायम शूदा कज़ाकिस्तान के सक़ाफ़्ती मर्कज़ हाऊस आफ़ आबाए के बानीयों में से एक थीं। लंदन में ही उन्होंने किताब कज़ाकिस्तान लिखी और इस वक़्त ही वह जमाअत से परिचित हुईं और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ पाई। वह कहती हैं कि वह सिर्फ़ बच्चों की माता ही नहीं थीं बल्कि उन समस्त के लिए भी जो उन के पास मदद या परामर्श के लिए आते थे माता का दर्जा रखती थीं।

नूरम ताईबीक साहिब कहते हैं कि जमाअत के तमाम नौजवान अहमदियों और प्राय समस्त जमाअत अहमदिया कज़ाकिस्तान के लिए माँ की जगह पर थीं। कहते हैं कि मैंने दस साल के अरसा में क्लारा साहिबा का वह दौर देखा है जिसके पहले तीन सालों में इंतिहाई जोश तथा जज़्बे के साथ और कई बार एक पहाड़ की तरह जमाअत की रक्षा और जमाअत के सेवा में व्यस्त रहती थीं। उम्र, बीमारी और अन्य कामों और किताबों की तैयारी इत्यादि के कारण से बाद में उनकी मस्रूफ़ियत हो गई लेकिन दिल से हमेशा वह इसी कोशिश में रहती थीं कि जमाअत का ज़्यादा से ज़्यादा काम करें और ख़िलाफ़त और जमाअत से हमेशा मुख़लिस रहें।

फिर कहते हैं कि रोलान साहिब और क्लारा साहिबा कज़ाकिस्तान में एक लंबा अरसा से हुब्ब-उल-वतनी और मुल्क तथा क़ौम के आला तरीन तरक़्क़ी का निशान समझे जाते हैं। रोलान साहिब की कामयाबियों का बड़ा हिस्सा क्लारा साहिबा का मर्हूने मिन्नत है जो जमाअत अहमदिया कज़ाकिस्तान के लिए सिर्फ एक मुतहर्रिक सदर लजना ही नहीं थीं बल्कि सारी जमाअत अहमदिया कज़ाकिस्तान के पहले अमीर की उस्ताद भी थीं। कहते हैं मुझे याद है कि किस तरह 1996 ई से 1999 ई या इसके बाद तक भी उन्होंने निहायत उम्दा तरीक़ से जमाअत के मिशन हाऊस में लजना की साप्ताहिक क्लास में लजना की हाज़िरी को यक़ीनी बनाया जिसमें लजना मुरब्बी साहिब से विभिन्न सवाल करती और फिर उन्हें इन सवालों के जवाब बताए जाते। फिर यह कहते हैं कि जमाअत अहमदिया के लिट्रेचर का क्लारा साहिबा से बेहतर अनुवादक़ नहीं हो सकता। क्लारा साहिबा समस्त बुज़ुर्ग अहमदियों में सबसे बेहतरीन अहमदी थीं जो जमाअत के नौजवान अहमदियों के लिए रुहानी मज़बूती का माध्यम थीं। उनमें जमाअती इक़दार अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम की असल रूह क़ायम थी। मुश्किल हालात में भी वह कभी हिम्मत न हारती थीं बल्कि हमेशा ख़ुद भी और दूसरों को भी फ़ुतूहात की तरफ़ लेकर जाती थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी कोशिशें जो कज़ाकिस्तान में अहमदियत के बारे में हैं उनको भी पूरा फ़रमाए और उनकी दुआओं को भी पूरा फ़रमाए।

अगला वर्णन विंग कमांडर अबदुर्रशीद साहिब का है जो पिछले महीने फ़ौत हुए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके बेटे फ़ारूक़ कहते हैं कि उनके पिता का नाम बाबू शेख़ अब्दुल अज़ीज़ था जो सैक्रेटरी मज्लिस कारपर्दाज़ रहे और उनके ताया ख़ान साहिब फ़र्ज़ंद अली ख़ान साहिब थे जिन्हें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जमाअत की तारीख़ में पहला अमीर जमाअत लाहौर निर्धारित किया। आपके पिता ने अपनी जवानी मैं ख़ुद मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हाथ पर बैअत की थी। अपने पिता के बारे में कहते हैं कि रशीद साहिब अपने माता पिता की अकेली औलाद थे। रशीद साहिब के पिता की पहले शादी हुई फिर उनके अहमदियत क़बूल करने के कारण से बीवी अपनी दो बेटियों समेत छोड़ गई फिर दूसरी शादी हुई तो इस से रशीद साहिब पैदा हुए लेकिन कहते हैं कि माता पिता के बहुत आज्ञाकारी थे। हमेशा सेवा करते और आज्ञापालन से उनकी हर बात मानते। विभाजन तक पिता जी ने कादियान में ही शिक्षा प्राप्त की। फिर कहते हैं विभाजन के अवसर पर आप भी अन्य क़ाफ़िलों के साथ कादियान से लाहौर पहुंचे और फिर शुरू की चंद फ़ैमिलियों के साथ अपने माता पिता सहित रब्वाह जाकर आबाद गए। 1954 ई के लगभग उन्होंने एयर फ़ोर्स में कमीशन हासिल किया और मुख़्तलिफ़ एयर बैसिज़ (air bases)मैं तायिनात रहे। जहां भी रहे अहमदियत का ख़ूब इज़हार करते रहे। लीबिया में भी कुछ समय उनको डेपोटेशन पर पाकिस्तानी हुकूमत की तरफ़ से भेजा गया था। बावजूद इस के कि उनकी फाईल पर लिखा हुआ था यह कादयानी है, नहीं जा सकता लेकिन उनके अफ़्सर ने उनको फिर भी भेज दिया कि तुम्हारे जैसा अफ़्सर मुझे और कोई नज़र नहीं आ रहा। कहते हैं कि पिता जी कहते थे कि एक बार पाकिस्तान के लीबिया में राजदूत से मुलाक़ात थी। जब आप राजदूत के ऑफ़िस में दाख़िल हुए तो एक तरफ़ अरबी ज़बान में जमाअत के ख़िलाफ़ किताबें और पमफ़लट रखे हुए थे। अत: उन्होंने(रशीद ने) बड़े साहस से राजदूत से पूछा कि यह क्या है और क्यों रखे हुए हैं? उसने जवाब दिया ये सब कुछ लग़वयात हैं। फ़िक्र न करो। कहते हैं कि यह ज़ियाउल-हक़ की हुकूमत की तरफ़ से छपवाकर हमें भिजवाया गया है कि अपने देशों में तक़सीम करें और समस्त अरब एंबेसीज़ को यह भेजा गया है। फिर

यह कहते हैं कि 1982 ई में उनकी एक रिपोर्ट पर जब हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल राबे आए हुए थे तो वहीं हज़रत ख़लीफ़ अलराबे रहमहुल्लाह ख़ुद अपने हाथ से ख़त पर लिख के उनको अमीर जमाअत लीबिया निर्धारित किया और आप लीबिया के पहले अमीर जमाअत थे। नमाज़ों की अदायगी तो ख़ैर है ही कि एक मोमिन का फ़र्ज़ है। तिलावत क़ुरआन करीम और चंदों की अदायगी में भी बहुत बाक़ायदा थे। वफ़ात से पहले ही अपना हिस्सा आय अदा कर चुके थे। वक़्फ़-ए-जदीद, तहरीक जदीद के चंदे अपनी तरफ़ से भी और बुज़ुर्गों की तरफ़ से भी अदा किया करते थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की एक घटना अपने बेटे को वर्णन किया। बेटे ने लिखा है कि रब्वह के शुरू दिनों में किसी मौक़ा पर ख़लीफ़ा सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने आपको बुलाया, गर्मीयों के दिन थे। कहते हैं जब अब्बाजान कमरे में दाख़िल हुए तो हुज़ूर चटाई पर लेटे हुए थे और जब आप उठे तो हुज़ूर के शरीर पर चटाई के निशान मौजूद थे। इन बातों के कारण से कहते हैं हम बच्चों के दिल में भी ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इताअत का बड़ा ताल्लुक़ पैदा हुआ और बहुत प्रभाव हुआ।

1984 ई में एयर फ़ोर्स से स्क्वाड्रन लीडर के ओहदे से, रैंक से रिटायर हुए। फिर रब्वा में स्थायी निवास धारण कर लिया और सदर उमूमी और क़ज़ा के दफ़्तर में कुछ अरसा काम किया। ग़रीबों का ध्यान रखने वाले इन्सान थे और हर एक की जरूरतों का ख़्याल रखा करते थे और कहते हैं कि उन्होंने जाते हुए आख़िरी वसीयत भी यही की कि ग़रीबों का ख़्याल रखना। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन आदरणीया ज़ुबैदा बेगम साहिबा पत्नी करीम अहमद नईम साहिब अमरीका का है। उनकी वफ़ात भी पिछले महीने हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजिऊन। आप हज़रत डाक्टर हशमतुल्लाह ख़ान साहिब रज़ि की छोटी बहू थीं। मरहूमा ख़िलाफ़त की शैदाई, नेक और मुख़लिस औरत थीं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं वारिसों में तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। आपके एक बेटे मुनइम नईम साहिब ह्यूमैनिटी फ़रस्ट यू एस ए के चेयरमैन हैं और डाक्टर अब्दुल मनान सिद्दीक़ी साहिब की यह सास थीं। उनकी बेटी अमतुल शाफ़ी पत्नी डाक्टर मन्नान सिद्दीक़ी साहिब लिखती हैं कि हर किसी से प्यार और मुहब्बत का सुलूक करना उनकी आदत थी। उन के लिए दुआएं किया करती थीं। मुख़लिस मश्वरा दिया करती थीं। ग़रीबों की मदद क्या करती थीं। क़रीब और दूर के तमाम रिश्तेदारों से मुहब्बत का सुलूक करना उनका ख़ास गुण था। जवानी की उम्र से तहज्जुद पढ़ने वाली थीं। अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। जुमा के दिन ख़ास इबादत में गुज़ारते हुए उन्हें हमने अपने बचपन से देखा। अपना चंदा बरवक़्त अदा करने की फ़िक्र रहती थी। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। बच्चों को भी नेकियां करने की दे।

अगला वर्णन हफ़ीज़ अहमद घुमन साहिब का है जो पिछले दिनों में फ़ौत हुए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजिऊन। क़ुरआन करीम का अनुवाद और तफ़सीर पढ़ने का उनको ख़ास शौक़ था इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सारी पुस्तकों का अध्ययन किया हुआ था। रब्वह में धार्मिक सेवा का भी मौक़ा मिला। वक़्त के बेहद पाबंद थे। मेहमान नवाज़, बच्चों पे शफ़क़त करने वाले, बहुत अधिक सादा-मिज़ाज और मेहनती इन्सान थे। ज़बान पर हरवक़त ज़िक्र-ए-इलाही का विर्द रहता। लोगों की हमदर्दी में बहुत आगे थे। ख़ुद को तकलीफ़ में डाल कर भी दूसरों को सुकून मुहय्या किया करते थे। मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। वारिसों में पत्नी के इलावा तीन बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। उनके एक बेटे, उनके दामाद काशिफ़ हमीद बाजवा यहां हमारे पी ऐस दफ़्तर में इस वक़्त मुरब्बी के तौर पर काम कर रहे हैं। उनकी बेटी अमतुल क़ुद्दूस कहती हैं आजिज़ी और विनम्रता कूट-कूट कर भरी हुई थी। लिबास सादा, घर सादा, ख़ुराक सादा, अहंकार से हमेशा भागते थे। उन्हें हमेशा ग़रीबों की मदद का ख़्याल रहता था। बावजूद संसाधनों के अपने ऊपर कम ख़र्च करते थे और ग़रीबों पर ज़्यादा ख़र्च करते थे। अल्लाह तआला उनसे भी मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

घड़ी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह चुनाव ही हज़रत सिद्दीक़ रिज़ की फ़ज़ीलत और उच्च स्तर की वफ़ादारी की एक ज़बरदस्त दलील है। देखो। यदि वायसराए हिन्द किसी व्यक्ति को किसी ख़ास काम के लिए चुनाव करे तो वह राय बेहतर और उत्तम होगी या एक चौकीदार की। मानना पड़ेगा कि वायसराय का चुनाव बहरहाल सुयोग्य और उचित होगा, क्योंकि जिस हाल में सल्तनत की तरफ़ से वह सल्तनत का नायब निर्धारित किया गया है तो उस की वफ़ादारी, बुद्धिमत्ता और अनुभव पर सल्तनत ने भरोसा किया है। तब सल्तनत की बागडोर उसके हाथ में दी है। फिर उसकी उचित परामर्श और मामलों समझाने को योग्यता को पीठ पीछे डाल कर एक चौकीदार के चुनाव और राय को सही समझ लिया जाए यह अनुचित है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 338 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

बाद यक़ीन हासिल न हुआ था तो उन अपमानित लोगों को यक़ीन किस तरह प्राप्त हो सकता है। نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ ھٰذِہِ الْخُرَافَات

(तफ़सीर कबीर, भाग 4 पृष्ठ 117 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

हुज़ूर फ़रमाते हैं: मैं एक बार जुम्अ: की नमाज़ पढ़ा कर फ़ारिग़ हुआ तो एक सूफ़ी आदत का आदमी आगे बढ़ा और कहने लगा मैं एक सवाल करना चाहता हूँ। मैं ने कहा फ़रमाईए। कहने लगा अगर कोई व्यक्ति दरिया में सफ़र करते करते किनारा पर पहुंच जाए तो उस के बाद वह कश्ती में ही बैठा रहे या नीचे उतर जाए। जब उस ने यह सवाल किया उसी समय अल्लाह तआला ने मुझे उस के सवाल का उद्देश्य समझा दिया।वास्त में यह सोफिया का एक धोखा है जिसमें वे आम तौर पर पाए जाते हैं।

वे कहते हैं कि नमाज़ और रोज़ा और हज और ज़कात इत्यादि की हैसियत सवारियों जैसी है। ये सवारियां हमें अपने महबूब के दरवाज़ा तक पहुंचाने के लिए हैं। अगर कोई शख़्स अपने महबूब के दरवाज़ा तक पहुंच कर सवारियों पर बैठा रहे और नीचे न उतरे तो वह अव्वल दर्जा का गुस्ताख समझा जाता है। इसी तरह जब कोई आदमी ख़ुदा तआला का क़ुरब प्राप्त कर ले तो उसे नमाज़ रोज़ा की ज़रूरत नहीं रहती क्योंकि वह ख़ुदा के दरवाज़ा तक पहुंच गया। अत: जब उस ने यह सवाल किया,उसी समय अल्लाह तआला ने ये समस्त बात मुझ पर खोल दी और मैं ने उसे कहा अगर तो वह दरिया ऐसा है जो किनारे वाला है तो बेशक जब किनारा आए वो कश्ती से उतर जाए लेकिन अगर वह दरिया असीमित है और इस का कोई किनारा ही नहीं तो वह याद रखे कि जिस जगह वह नीचे उतरेगा उसी जगह वह डूब जाएगा। अब आप बताएं कि जिस दरिया का आपने वर्णन किया है वह सीमित है या असीमित। कहने लगा ,है तो असीमित। मैं ने कहा तो फिर अगर सीमित दरिया में इन्सान जिस जगह भी नीचे उतरेगा उसी जगह डूब जाएगा। उसकी सलामती इसी में है कि वह कश्ती पर सवार रहे।

(तफ़सीर कबीर, भाग 7 पृष्ठ 186 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

126वां
जलसा सालाना क़ादियान

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 126वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 24,25,26 दिसंबर 2021 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी के अनुसार वर्तमान कोविड 19 के हालात के प्रोटोकॉलज़ को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष वही लोग जलसे में शामिल होंगे जिन को बाक़ायदा जमाअती तौर पर शमूलियत के लिए टिकट और निमंत्रण पत्र जारी किया जाएगा अन्य जमाअत के लोग अपनी जमाअतों में ऑनलाइन स्ट्रियमिंग के माध्यम से जलसा सालाना के रुहानी प्रोग्रामज़ से लाभ प्राप्त कर सकेंगे। इस सिलसिले में इस से पूर्व नज़ारत उलिया की ओर से जमाअतों में सर्कुलर कर दिया गया है। जमाअत के लोग इस मुबारक जलसे के सफ़ल आयोजित होने के लिए दुआएं जारी रखें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का मूजिब बनाए। आमीन।।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

पृष्ठ 2 का शेष

औरत का ज़ेवर छीनते हुए उसके हाथ कान ज़ख़मी कर देता है या उसके किसी organ को ऐसा नुक़्सान पहुंचा देता है कि वह किसी माज़ूरी का शिकार हो जाती है तो ऐसे चोर को फिर उसके जुर्म के अनुसार सज़ा दी जाती है जिसमें हाथ काटने की भी सज़ा शामिल है।

इसी तरह जो व्यभिचार आपस की सहमती से हुआ हो यदि वह इस्लामी तरीक़ा गवाहों के साथ साबित हो जाए तो पार्टियों को सौ कोड़ों की सज़ा का आदेश है। लेकिन जिस व्यभिचार में ज़बरदस्ती की जाए और इस में निहायत जानवर की भांति अत्याचार की भावना पाई जाती हो। या कोई व्यभिचारी छोटे बच्चों को अपने ज़ुल्मों का निशाना बनाते हुए इस घिनौनी हरकत का मुर्तक़िब हुआ हो तो ऐसे व्यभिचारी की सज़ा केवल सौ कूड़े तो नहीं हो सकती। ऐसे व्यभिचारी को फिर क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् मायद: आयत 34 और सूरत अल् अह्ज़ाब की आयत 61 ता 63 में वर्णन शिक्षा के अनुसार क़तल और संगसार जैसी कठोर सज़ा भी दी जा सकती है। लेकिन इस सज़ा का फ़ैसला करने का इख़तियार हुकूमत-ए-वक़्त को दिया गया है और इस शिक्षा के माध्यम से उमूमी तौर पर हुकूमत-ए-वक़्त के लिए एक रास्ता खोल दिया गया।

इसलिए उन्हें क़ुरआन-ए-करीम की आयात से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी किस्म के व्यभिचारी के लिए संगसार की सज़ा के क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन होने का वर्णन फ़रमाया है।

एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में बैंकों में जमा कराई जाने वाली रक़ूम पर मिलने वाले लाभ को अपने ज़ाती प्रयोग में लाने की विषय में प्रश्न किया है। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 26 नवंबर 2018 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : पाकिस्तान के बैंक साधारणत: p l s अर्थात नफ़ा नुक़्सान में शराकत के तरीक़-ए-कार के अधीन रक़ूम जमा करते हैं। इस सिस्टम के अधीन जमा कराई जाने वाली रक़ूम पर मिलने वाली ज़ायदाद रक़म सूद के अंतर्गत नहीं आती। इसी तरह हुकूमती बैंकों में जमा करवाई जाने वाली रक़ूम पर मिलने वाली ज़ायद रक़म भी सूद में शुमार नहीं होती। क्योंकि हुकूमती बैंक अपने सरमाया को कल्याणकारी कामों पर लगाते हैं जिसके परिणाम में देश में रहने वालों की सहूलतों के लिए विभिन्न योजनाएं बनाए जाती हैं, अर्थव्यवस्था में तरक़्क़ी होती है और देश के लोगों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं। इसलिए ऐसे बैंकों से मिलने वाले लाभ को ज़ाती इस्तिमाल में लाया जा सकता है।

जहां तक सूद का सम्बन्ध है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस की यह तारीफ़ फ़रमाई है कि एक व्यक्ति अपने फ़ायदा के लिए दूसरे को रुपया क़र्ज़ देता है और फ़ायदा निर्धारित करता है। यह तारीफ़ जहां सादिक़ आवेगी वह सूद कहलाएगा।

इस्लाम ने जिस सूद से मना फ़रमाया है इस में गरीबों की मजबूरी का नाजायज़ फ़ायदा उठाते हुए उन्हें क़र्ज़ देते वक़्त इस पर पहले से सूद की एक रक़म निर्धारित कर ली जाती थी और ग़रीब इस सूद दर सूद के बोझ तले दबते चले जाते थे और यह क़र्ज़ और सूद कभी ख़त्म न होने का नाम ही नहीं लेता था। जबकि मौजूदा ज़माना में यदि कोई क़र्ज़ ली हुई रक़म वापस करने की ताकत न रखता हो और उस का दिवालीया निकल जाए तो bankruptcy के तहत वह क़र्ज़ ख़त्म भी हो जाता है।

इसी लिए इस ज़माना के हकम और अदल सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि "अब इस मुल्क में अक्सर मसायल ज़ेर-ओ-ज़बर हो गए हैं। कल तिजारतों में एक न एक हिस्सा सूद का मौजूद है। इस लिए उस वक़्त नए इजतिहाद की ज़रूरत है।" और हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इस इरशाद की रोशनी में जमाअत अहमदिया इस बारे में विभिन्न विषय और मसायल सामने आने पर तहक़ीक़ करती रहती है। और अब भी इस पर मज़ीद तहक़ीक़ हो रही है।

प्रश्न : एक दोस्त ने "फतावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" के re-vised ऐडीशन के बारे में लिखा कि इस पुस्तक के पब्लिशर फ़ख़रुद्दीन मुल्तानी साहब ने चूँकि अहमदियत को छोड़ दिया था इसलिए उनके नाम और उनके तहरीर करदा दीबाचा को इस ऐडीशन से हटा देना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 26 नवंबर 2018 ई. में इस का जमाअती परंपरा के अनुसार निहायत सुन्दर निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : वर्णित पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फतावा पर आधारित है और फ़ख़रुद्दीन मुल्तानी साहब ने 1935 ई. में उसे तैयार किया था। यह पुस्तक जमाअती लिटरेचर में काफ़ी समय तक प्रयोग होती रही है। लेकिन इस में पुस्तक और हवालाजात की बहुत ज़्यादा ग़लतियां थीं।

इसलिए पुस्तकत और हवालाजात की ग़लतियों को इस नए ऐडीशन में दरुस्त कर दिया गया। लेकिन चूँकि इस पुस्तक के पब्लिशर और लेख़क फ़ख़्रउद्दीन मुल्तानी साहब थे, अब यदि हम उनके नाम और उनके तहरीर किए दीबाचा को इस नए ऐडीशन में से हटा दें तो यह दरुस्त बात नहीं होगी क्योंकि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ मित्र जो हुज़ूर की वफ़ात के बाद अपनी ग़लती की वजह से जमाअत से अलग हो गए थे लेकिन उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में विभिन्न कामों में जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई और उनके नाम तारीख़ अहमदियत में शामिल हैं। आपकी इस तजवीज़ के अनुसार तो फिर हमें इन सब लोगों के नाम और उनकी ख़िदमत को भी तारीख़ अहमदियत से निकाल देना चाहिए। लेकिन यह बात जमाअती आचार और रिवायत के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब जमाअत की तरफ़ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फ़तवे पर आधारित "फ़िक़्ह अल्-मसीह" के नाम पर भी एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है जिसमें "फतावा हज़रत मसीह मौऊद" से भी ज़्यादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात और फ़तवे शामिल कर दिए गए हैं।

प्रश्न : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ बंगलादेश के मुरब्बियान की virtual मुलाक़ात तिथि 08 नवंबर 2020 ई. में एक मुरब्बी साहब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक इल्हाम हुआ था कि "पहले बंगाला की निसबत जो कुछ आदेश-जारी किया गया था अब उनकी दिलजोई होगी" इस बारे में हम हुज़ूर अनवर की ज़बान-ए-मुबारक से कुछ सुनना चाहते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : एक सौ तीस साल हो गए दिलजोई करते करते, अब बंगाला वाले कोई काम करेंगे तो फिर दिलजोई होगी। अब काम करें और काम करके दिखाएं। अपने अंदर तक़्वा का मयार बुलंद करें, अपने अंदर दीन की ख़िदमत का शौक़ का मयार बुलंद करें और फिर उसे अमली जामा पहनाएं और मुल्क में एक इन्क़िलाब पैदा करने की कोशिश करें।

जितनी मुख़ालिफ़त होती है, मुख़ालिफ़त तो एक खाद और बीज का काम दे रही है, जमाअत का इतना ही परिचय हो रहा है। जितने अहमदियों को मार पड़ती है उतना ही परिचय हो रहा है। पाकिस्तान में अहमदियों को मार पड़ रही है तो उतना बाहर की दुनिया में जमाअत का परिचय हो रहा है, बल्कि अब मुल्क में भी हो रहा है। पहले तो पाकिस्तान में केवल शहरों में जमाअत की मुख़ालिफ़त होती थी और शहर-वालों को पता था, अब देहातों में और छोटी छोटी जगहों पर भी मुख़ालिफ़त होती है, हर जगह पता लग गया है। इस परिचय होने की वजह से बाहर की दुनिया को भी पता लग रहा है और अंदर भी कुछ नेक फ़ित्रत और सईद फ़ित्रत लोग हैं, वहां उनको एहसास पैदा हो रहा है कि हम तहक़ीक़ करें कि जमाअत अहमदिया क्या चीज़ है? इस्लाम के बारे में उनके क्या ख़्यालात हैं? इस्लाम को ये क्या समझते हैं? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का स्थान उनकी नज़र में क्या है? ख़ुदा तआला के कलाम को ये किस तरह मानते हैं? जब वे तहक़ीक़ करते हैं तो फिर उस तजस्सुस की वजह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

से उनको फिर जमाअत के क़रीब आने का अवसर मिलता है।

तो यह जो मुख़ालिफ़त है यह तो आप के लिए खाद का काम दे रही है, इस से फ़ायदा उठाने की कोशिश करें और जब आप क़ुर्बानियां देंगे तो इसके बाद दिलजोई भी आपकी की जाएगी और इसके लिए अल्लाह के फ़ज़ल से आपने क़ुर्बानियां दी हैं। मस्जिदों में बम भी फटे, हमारे मुरब्बी की टांग भी ज़ाए हुई, ज़ख़मी भी हुए, शहीद भी हुए। तो समय समय पर ऐसे वाक़ियात होते रहते हैं। और मैं अल्लाह तआला से हालात की बेहतरी के लिए दुआ भी करता रहता हूँ। फ़िक्र भी रहती है। लेकिन इसके साथ साथ दिलजोई का मुक़ाम हासिल करने के लिए आपको भी कोशिश करनी पड़ेगी।

इसलिए हर मुरब्बी और मुअल्लिम यह अह्द करे कि उसने डरते डरते दिन गुज़र करना है और तक़्वा से रात व्यतीत करनी है। और अहमदियत का सन्देश पहुंचाने की जो ज़िम्मेदारी उस पर डाली गई है, इसको एक विशेष जोश और जोश से मुल्क के कोने कोने में फैलाना है। और सबसे बढ़कर यह कि अपने अमली उदाहरण दिखाने हैं, अपने अंदर सादगी पैदा करनी है। जो भी थोड़ा बहुत गुज़ारा मिलता है, और जो भी थोड़ी बहुत सहूलयात जमाअत की तरफ़ से मिलती हैं उनसे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाना है। और उनको बहुत समझना है। और अपनी क़ुर्बानी के मयार को बुलंद से बलंद करते चले जाना है। अल्लाह तआला के साथ ताल्लुक़ में बढ़ना है। अपनी रातों को ज़िंदा करना है। हर मुरब्बी और मुअल्लिम का काम है कि कम से कम एक घंटा तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। अपने जायज़े लें कि क्या आप लोग एक घंटा तहज्जुद पढ़ते हैं? क्या आप लोग रात को उठ के एक घंटा नफ़ल में अल्लाह तआला के हुज़ूर रो-रो के दुआ करते हैं? कि अल्लाह तआला हमारे लिए आसानियां पैदा करे और जमाअत की तरक़्क़ी के सामान पैदा फ़रमाए।

फिर क़ुरआन-ए-करीम पर तदब्बुर और ग़ौर करने की आदत डालें। केवल चंद एक बने-बनाए मज़मून हैं, उनको पढ़ने से आपको कुछ हासिल नहीं होगा। अपने इलम को बढ़ाएं, और वसीअ-तर करने की कोशिश करें। यही चीज़ है जो आप के लिए आगे इंशा-ए-अल्लाह काम भी आएगी और आप इस से फ़ायदा उठाते हुए दूसरे उल्मा से बेहस करने के भी योग्य होंगे और लोगों को भी बताने के योग्य होंगे।

ज़ाहिरी फ़िक़्ह और हदीस और क़ुरआन की कुछ तफ़सीरें तो कुछ ग़ैर अहमदी उल्मा ने आपसे ज़्यादा पढ़ी होंगी और वे पढ़ के उस को वर्णन भी कर सकते हैं लेकिन आपने वह हक़ीक़त वर्णन करनी है जो इस ज़माना के हकम और अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताई और समझाई हैं। और वह फ़िक़्ह है जो हमने जारी करना है। वही क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर है, वही हदीस की तशरीह है जो हमने दुनिया को बितानी है। और इसके लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी, अपने इलम में बढ़ोतरी करना पड़ेगा और फिर अल्लाह तआला से मदद मांगनी होगी। अपने इलम में बढ़ोतरी के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगें, अपनी रुहानी तरक़्क़ी के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगें। और इस मुल्क में जमाअत अहमदिया के सन्देश को पहुंचाने के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगें। और मुख़ालिफ़त के दूर होने के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगें। अपने मुल्क को अल्लाह तआला के अज़ाब से बचाने के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगें। तो बहुत सारी दुआएं हैं जो इन्सान ने करनी होती हैं, वे आप करें। एक जोश और जज़बे और तड़प से ये दुआएं करेंगे तो फिर देखें कि किस तरह एक इन्क़िलाब आप बंगलादेश में ले आते हैं और फिर जब आप पर थोड़ी बहुत सख़्तियां भी आयेंगी तो फिर अल्लाह तआला कहता है कि इन लोगों ने सख़्तियां बर्दाश्त की हैं अब उनकी दिलजोई भी करो। तब यह दिलजोई होगी।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और मुरब्बी साहब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि मेरे इलाक़ा में लोग ख़ुद को मुस्लमान तो कहते हैं, लेकिन इस्लाम के साथ उनका कोई ताल्लुक़ नहीं है, उन लोगों को किस तरह तब्लीग़ की जाए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का निमंलिखित शब्दों में उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : उन को बताएं कि तुम लोग मुस्लमान हो। फिर भी इस के कि तुम जमाअत अहमदिया के सन्देश को क़बूल करते हो या नहीं करते लेकिन तुम अपने आप को मुस्लमान कहलाते हो तो अल्लाह और रसूल का यह आदेश है कि जो क़ुरआन-ए-करीम अल्लाह तआला ने उतारा है, वह तुम्हें पढ़ना आना चाहिए, तुम्हें पाँच वक़्त-ए-नमाज़ पढ़नी आनी चाहिए। अरकान-ए-इस्लाम हैं उन पर यक़ीन होना चाहिए और उन पर अमल भी होना चाहिए। तो उनको आप समझाएँ कि देखो तुम मुस्लमान कहलाते हो तो अल्लाह के रसूल पर तुम्हारा ईमान पूर्ण उस वक़्त होता है जब तुम उस की सुन्नत पर अमल करो। फिर जो शरीयत अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की सूरत में उतारी है, तुम उसे पढ़ना सीखो। और यदि तुम्हें ज़रूरत है कि तुम्हें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना नहीं आता और तुमने सीखना है तो हम तुम्हें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने के लिए हाज़िर हैं और फिर अल्लाह और रसूल की बातें उन्हें बताएं। क़ुरआन-ए-करीम उन्हें पढ़ाऐं और उन्हें यह कहने की ज़रूरत नहीं कि तुम अहमदी हो जाओ कि न हो। जब वे इस तरह इस्लाम की शिक्षा के बारे में जानेंगे तो फिर वो ख़ुद अगला क़दम उठाएँगे। वे आपसे पूछेंगे कि अच्छा भई हमारे मौलवी तो हमें कुछ नहीं पढ़ाते थे, तुम लोग हमें यह पढ़ा रहे हो, तुम कौन हो? फिर आगे बात चलती है, फिर तब्लीग़ के रस्ते भी खुल जाएँगे। दूसरा यह कि उन के लिए दुआ भी करें। मुस्लिम उम्मा के लिए दुआ भी करें।

यही तो ज़माना था जिस ज़माना में इस्लाम का केवल नाम होना था।

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी

तभी तो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आना था। तभी तो इस मह्दी और मसीह ने आना था, जिसने लोगों को दुबारा फिर ख़ुदा तआला के क़रीब करना था और उनको एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलानी थी। तो ये चीज़ें लोग भूल गए हैं। तभी तो मसीह मौऊद आए थे। और यही मसीह मौऊद का ज़माना था। यही मसीह मौऊद का काम है। यही मसीह मौऊद के मानने वालों का काम है। और यही उन लोगों का काम है जिन्हों ने تَفَقُّه فِي الدِّيْن करके अपने आपको दीन की ख़िदमत के लिए, वक़्फ़ करने के लिए, तब्लीग़ करने के लिए, तर्बीयत करने के लिए पेश किया है। वे आप लोग हैं। अत: ये बातें पहुंचाएं और सन्देश पहुंचाएं। उनको समझाएँ कि असल दीन क्या है। तो यह तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के ठीक अनुसार मसीह मौऊद के आने के ज़माना की अलामत है कि लोग नाम के मुस्लमान हैं, और इस्लाम को बिल्कुल भूल चुके हैं, उनको कुछ पता ही नहीं। केवल لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ तो कह देते हैं, लेकिन पता नहीं कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का अर्थ क्या है?

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ तो कह देते हैं लेकिन यह पता नहीं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा क्या है? तो हमने ये चीज़ें लोगों को बितानी हैं। इस के लिए कोशिश करनी होगी। उनको बताना होगा। पहले उनको इस्लाम के बारे में बताएं। फिर अहमदियत के बारे में ख़ुद बख़ुद उनको पता लग जाएगा।

यह तो अल्लाह तआला की और अल्लाह के रसूल की बात पूरी हो रही है कि उनको दीन का नहीं पता और इस्लाम का केवल नाम रह गया है। टाइटल रह गया है। और जो मौलवी कहता है इसके पीछे चल पड़ते हैं। तोड़ फोड़ कर दो। अहमदियों का सिर फाड़ दो। अहमदियों की टांगें तोड़ दो। अहमदियों को क़तल कर दो। अहमदियों को शहीद कर दो। अहमदियों की मस्जिदें गिरा दो। अहमदियों की जायदादों को नुक़्सान पहुंचा दो। बस यही बातें रह गई हैं नाँ, उनके पास और क्या रह गया है? इसी चीज़ से हमने उनको प्यार और मुहब्बत से समझाना है। अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि प्यार से, मुहब्बत से काम करोगे तो यह तुम्हारे बेहतरीन दोस्त बन जाएँगे। وَلِيٌّ حَمِيْمٌ फ़रमाया है कि तुम्हारे गहरे दोस्त बन जाएँगे, जिगरी यार बन जाएँगे।

प्रश्न : एक और मुरब्बी साहब ने इस मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया हुज़ूर को धर्म (इस्लाम अहमदियत) की खातिर जेल में कैद होने का अवसर मिला है, इस असीरी के विषय में यदि हुज़ूर कुछ फ़रमाएं

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 9 Decmber 2021 Issue No.49

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तो नवाज़िश होगी? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस के उत्तर में फ़रमाया :

उत्तर : क्या बताऊँ? मुझे तो धर्म (इस्लाम अहमदियत) की खातिर जेल में कैद होने के तौर पर पता ही नहीं लगा कि मेरी असीरी के दिन किस तरह गुज़र गए? अल्लाह के फ़ज़लों को ही देखता रहा। गर्मी के दिन थे, अल्लाह तआला गर्मी को ठंड में बदल देता था। बड़े आराम से जेल में बैठे रहते थे। और सलाख़ों के पीछे रहते थे, कोई फिक्रो फ़ाक़ा नहीं था। दिल में यह ख़्याल था कि जो दिफ़ा मुझ पर लगी हुई है इस की सज़ा या उम्र क़ैद है या फांसी है, इन दोनों में से कुछ तो मुझे मिलना है। इसलिए मैंने कहा कि अल्लाह तआला से ही माँगो और अल्लाह तआला को राज़ी करने की कोशिश करो। बाक़ी जमाअत की ख़ातिर यदि सज़ा मिलनी है तो यह तो बड़ी बरकत की बात है। लेकिन अल्लाह तआला को कुछ और ही मंज़ूर था। अल्लाह तआला ने दसवें, ग्यारवें, बारहवें दिन मुझे जेल से बाहर निकाल दिया। तो इस से ज़्यादा मैं क्या कहूं। मैंने कोई बड़ा तीर मारा? मैं ने तो वहां कुछ भी नहीं किया।

प्रश्न : इस मुलाकात तिथि 08 नवंबर 2020 ई. के आख़िर पर मुहतरम अमीर साहब बंगलादेश ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि इस ज़माना में ख़ुदा तआला के नुमाइंदा होने की हैसियत से हुज़ूर बंगलादेश के लिए कोई ऐसी दुआ कर दें, जिससे हमारी काया पलट जाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया :

उत्तर : सारी दुनिया के लिए क्यों न करूँ? केवल् बंगलादेश के लिए क्यों करूँ? मुझे सीमित क्यों कर रहे हैं? मैं तो सारी दुनिया के लिए दुआ करता हूँ। और अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक वक़्त रखा होता है, जब वह वक़्त आएगा तो इंशा अल्लाह तआला काया भी पलट जाएगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किसी ने कहा कि मेरे लिए दुआ करें कि मेरा अमुक काम हो जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया कि अच्छा मैं दुआ करूँगा। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे वापस बुलाया और उसे फ़रमाया कि तुम भी दुआ करो और अपनी दुआओं से मेरी दुआ की मदद करो। तो यह आप लोगों का भी काम है कि जिस तरह मैंने अभी कहा है कि रातों को उठें। हर मुरब्बी और मुअल्लिम जो है लाज़िमी क़रार दे कि उसने तहज्जुद पढ़नी है और बेनफ़्स हो के काम करना है। ख़ुदा तआला का हक़ भी अदा करना है और उसके बंदों के हक़ भी अदा करने हैं। अपनी ख़िदमत दीन को इक फ़ज़्ल-ए-इलाही समझना है और इस के लिए किसी reward की और किसी तारीफ़ की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। यदि इस तरह काम करेंगें तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़लों की बेशुमार बारिश बरसाएगा। और बड़ी जल्दी बरसाएगा इन शा अल्लाह तआला आप देखेंगे। अल्लाह तआला आप सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और आप लोगों को अपने अपने मैदान में कामयाब फ़रमाए। आमीन

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. एस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार इंटरनैशनल 15 जनवरी 2021)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-24)

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार मेहमानों की सेवा में डिनर प्रस्तुत किया गया। डिनर के तुरंत बाद रेडीयो NDR के एक लेखक प्रतिनिधि ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल का इंटरव्यू लिया।

लेखक ने प्रश्न किया कि धार्मिक सहिष्णुता और बर्दाश्त के सम्बन्ध में जिन इस्लामी शिक्षाओं के बारे में आपने वर्णन किया है, सऊदी अरब और संसार में उपस्थित दूसरे मुस्लमान इन शिक्षाओं पर अनुकरण क्यों नहीं करते।

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा काम तो केवल इस्लाम की हक़ीक़ी वास्तविक शिक्षाओं को प्रस्तुत करना है। मैं किसी पर ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकता या किसी को मजबूर तो नहीं कर सकता। और जहां तक हमारी जमाअत का सम्बन्ध है तो मैं हमेशा उन्हें कहता हूँ कि इस्लाम की असल और सुन्दर शिक्षाओं पर कार्यरत रहें। मैं जहां भी जाता हूँ या जहां भी मुझे कुछ कहने का अवसर मिलता है तो मैं उनसे यही चीज़ कहता हूँ। अत: मैं ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकता परन्तु प्रत्येक जगह यही संदेश देता हूँ कि इस्लाम का नाम बदनाम मत करो। बल्कि एक मर्तबा तो मैं ने उन्हें सीधे संबोधित करके भी कहा है कि इस्लाम का नाम बदनाम मत करो। इस्लाम तो अमन का धर्म है। ख़ुदा अपने धर्म की ख़ातिर अपने व्यक्तिगत् लाभ को प्राप्त करने के बजाय असल इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण करो।

इस के बाद इस प्रतिनिधि लेखक ने पूछा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का जर्मनी में जमाअत अहमदिया के भविष्य के बारे में क्या विचार है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यहां जर्मनी में जमाअत बहुत काम करने वाली है। नौजवान वर्ग पढ़ा लिखा है। हमारे जो बच्चे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इन में पर्याप्त ज़हीन और योग्य विद्यार्थी हैं। इसी तरह नौजवानों की एक कसीर संख्या यूनीवर्सिटीयों से ग्रैजूएशन और मास्टर्ज़ कर रही है और कुछ पी एच डी और रिसर्च भी कर रहे हैं। हम अपने नौजवानों को यही कहते हैं कि दुनियावी ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ अपने बुनियादी कर्तव्य अर्थात अपने स्रष्टा को पहचानने और इस की शिक्षाओं और अहकामात पर अनुकरण करना न भूलें।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना की मारकी में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य पाया और अपने आक़ा को देखा और बच्चियों के समूहों ने दुआओं वाली नज़्में और तराने प्रस्तुत किए और अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लजना की मारकी से बाहर पधारे तो बच्चे एक लाइन में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गए जहां लोकल इंतिज़ामिया और वक़ारे अमल करने वाले ख़ुद्दाम, अंसार और जर्मन मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद से बाहर पधारे और इस अवसर पर उपस्थित, इस समारोह में शामिल होने वाले जमाअत के लोगों को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा। (शेष आगे)

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 3 -10 सितम्बर 2015)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad